त्रैमासिक
मूल्य : 20 रुपए
जनवरी-मार्च 2015

कोंपल



जनवरी-फरवरी-मार्च की कुछ महत्वपूर्ण तिथियाँ

25 जनवरी (बसंत पंचमी)

महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की जयन्ती।

5 फरवरी (1919)

चौरी-चौरा काण्ड, जिसमें अंग्रेजों ने जुल्म के खिलाफ जनता के बहादुर सपूतों ने बगावत को आवाज उठाते हुए स्थानीय थाने में आग लगा दी थी।

10 फरवरी



महान कवि व नाटककार बर्टोल्ट ब्रेष्ट की जन्मदिवस

18 फरवरी (1946)

भारतीय नौसेना के बहादुर नौजवानों ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह किया था जिसे हम नौसेना विद्रोह के नाम से जानते है।

19 फरवरी (1673)

महान क्रान्तिकारी वैज्ञानिक कॉपर्निकस का जन्मदिवस। इसे विज्ञान दिवस के रूप में भी मनाया जाता है।

27 फरवरी (1931)



महान क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आज़ाद का शहादत दिवस।

8 मार्च



अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस

23 मार्च



शहीद दिवस

(1931) शहीदे आज़म भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव ने देश की आज़ादी की खातिर आज के दिन ही हँसते-हँसते फाँसी का फंदा चूम लिया था। - आज ही के दिन पंजाब के क्रान्तिकारी कवि



25 मार्च



क्रान्तिकारी पत्रकार, कमल के सिपाही गणेश शंकर विद्यार्थी आज ही के दिन साम्प्रदायिक दंगों को रोकने की कोशिश में शहीद हो

29 मार्च



विश्व प्रसिद्ध महान क्रान्तिकारी लेखक मक्सिम गोर्की का जन्मदिवस

(1868)

भारत के प्रथम स्वतंत्रता संघर्ष (1857) के नायक मंगल पाण्डे ने आज ही के दिन विद्रोह का विबगुल फूंका था

कोंपल

त्रैमासिक, वर्ष 2, अंक 4
जनवरी-मार्च, 2015

संस्थापक
;स्व.द्ध कमला पाण्डेय

सम्पादक
गीतिका

सज्जा
रामबाबू

सम्पादकीय कार्यालय
डी-68, निरालानगर
लखनऊ-226020
फोन : 0522-2786782

इस अंक का मूल्य : 20 रुपये
वार्षिक सदस्यता : 100 रुपये
(डाक व्यय सहित)
आजीवन सदस्यता : 2000 रुपये

स्वत्वाधिकारी अनुराग ट्रस्ट के लिए गीतिका द्वारा डी-68, निराला नगर, लखनऊ से प्रकाशित तथा लक्ष्मी ऑफसेट प्रेस, इन्दिरानगर, लखनऊ से मुद्रित।
सम्पादन एवं प्रकाशन पूर्णतः स्वैच्छिक तथा अवैतनिक

इस अंक में

हमारी बात

प्यारे बच्चो,

इस बार कोंपल में हम तुम्हारे लिए दिलचस्प चीजों की पिटारी लेकर आये हैं। शरारती और गुदगुदानेवाली कहानियां तो हैं ही, डा. पेंचकस घुमाघुमाकर की वैज्ञानिक करामातें भी हैं जिसे वे बड़ी-बड़ी प्रयोगशालाओं में नहीं बल्कि किसी भी जगह, किसी छोटे से कमरे में भी अंजाम दे सकते हैं। असल बात तो यही है कि सोचने का तरीका वैज्ञानिक होना चाहिए फिर तो प्रयोग कहीं भी किये जा सकते हैं। कई बार यह देखा जाता है कि खूब ऊंची शिक्षा पाकर भी लोगों में वैज्ञानिक ढंग से सोचने समझने की आदत नहीं पड़ती। इसलिए तर्क को धता बताकर वे हर ऐसी चीज पर विश्वास कर लेते हैं जिसे किसी बड़े या जानेमाने व्यक्ति ने कहा हो। इस चक्कर में उनका जीवन भी घनचक्कर बन जाता है और पछताने का अवसर भी उन्हें नहीं मिलता। भगतसिंह और राहुल सांकृत्यायन, कापरनिकस और गैलिलियो, मक्सिम गोर्की और प्रेमचंद – इन सभी लोगों ने खुद को घनचक्कर नहीं बनने दिया क्योंकि इनके पास तर्क की जादुई छड़ी थी।

इस अंक से हम तुम्हारे लिए बाल फिल्म कोना भी शुरू कर रहे हैं। बच्चों के लिए अच्छी फिल्मों का वैसे भी टोंटा पड़ा हुआ है जबकि हमारे अपने देश और अन्य देशों में भी बच्चों के लिए कई बढ़िया फिल्में बनी हैं। अब से हर अंक में किसी शानदार बाल फिल्म के बारे में हम तुम्हें बतायेंगे। इसके साथ ही मक्सिम गोर्की के प्रसिद्ध उपन्यास 'मेरा बचपन' का एक मजेदार अंश भी इस अंक में शामिल है। तो फिर देर किस बात की। अंक तुम्हारे हाथों में है। बस शुरू हो जाओ।

– तुम्हारी दीदी

तुम्हारी बात

मुझे आलसी तिम्मा की कहानी अच्छी लगी। और सबसे अधिक मजा आया गरुण और चकवा की कहानी पढकर। पत्रिका में और भी कहानियां होतीं तो अच्छा होता।

मोहम्मद अशरफ, देवरिया

कोंपल पहली बार मुझे लखनऊ के एक पुस्तक प्रदर्शनी में मिली और फौरन पसन्द भी आ गई। मैं अपने बेटे के लिए इसे नियमित मंगाना चाहता हूं। उसके पास एक छोटी सी लाइब्रेरी भी है,

प्रदीप सक्सेना, लखनऊ

भोंबोल सरदार

(पांचवी किश्त)

शालुकडांगा में



छोटा सा प्लैटफॉर्म

प्लैटफॉर्म के लगभग बीच में एक छोटा सा कमरा, पुआल का छप्पर और बांस की चटाई से बनी उसकी दीवार। दीवार में एक छोटी सी खिड़की। खिड़की के निचले हिस्से में बनी लकड़ी के काउण्टर में हाथ घुसाकर मुसाफिर टिकट खरीदते हैं। कमरे की दीवार पर और प्लैटफॉर्म के दोनों छोरों पर लगे दो बोर्ड पर अलकतरे से अंग्रेजी और बंगला के बड़े हर्फों में लिखा हुआ है-शालुकडांगा।

धूप खिली हुई है।

भोंबोल ने चारों ओर नज़रें दौड़ाई। शालुकडांगा में एक भी शालुक फूल तो दूर की कौड़ी है, कहीं कोई तालाब भी नहीं हैं। बस चारो ओर है पानी से भरे धान के खेत। धान के पत्ते और नाजुक बालियां हवा में खेल रही हैं। उनके बीच ऊंची टीले सी ज़मीन पर एक गांव, पानी से पैर समेटे मानो गुड़ी-मुड़ी होकर बैठा हुआ है। एक टेढ़ी-मेढ़ी, कहीं कच्ची, कहीं पक्की सड़क स्टेशन से निकल कर सांप की तरह रेंगती हुई बीच गांव से होकर चली गयी है, पूरब की ओर बढ़ती हुई बहुत दूर तक। रास्ते के दोनों ओर छांव देते बड़े-बड़े पेड़ एक के बाद एक छाते के तरह तने हुए हैं। स्टेशन की ओर से छप्पर से ढ़की एक बैलगाड़ी आ रही है। उसके पिछले हिस्से से एक धारीदार मैली सी

चादर लटक रही है, जो बीच-बीच में ऊपर सरक जाती है। लगता है अन्दर कोई नवेली बहू बैठी है।

अचानक गांव की दिशा से एक साइकिल निकला। साइकिल चलाने वाले के माथे पर पगड़ी और तन पर काला कोट था। साइकिल सवार ने बैलगाड़ी के सामने आते ही घंटी बजा दी-ट्रिं-ट्रिं... ट्रिं-ट्रिं...।

दोनों बैल सामने साइकिल देखकर बिदक गये, उनकी बड़ी-बड़ी आंखें फैल गयीं, वे रास्ते को छोड़ सीधे कीचड़ और पानी भरे खेत में उतर गये और बेतहासा भागने लगे। भोंबोल अपनी हंसी को और रोक नहीं पाया। बैल दौड़ भी रहे थे और लगातार सर झुकाकर जूए से मुक्त होने की कोशिश भी कर रहे थे। पर उनके लंबे-लंबे सिंग आड़े आ जाते और उनकी कोशिश बेकार हो जातीं। खैर, गाड़ीवान काफी कोशिश और कसरत के बाद बैलों को शांत कर पाया, गाड़ी और कुछ दूर खेत में चलकर फिर सड़क पर चढ़ आई और गांव की ओर बढ़ने लगी।

स्टेशन के दूसरी ओर एक बड़ा सा पीपल का पेड़ था और पेड़ के नीचे हलवाई की एक दूकान थी।

भोंबोल ने पटरी पार की और दुकान के सामने पहुंच गया। हलवाई के एक हाथ में थी गरम राब (तरल गुड़) की हांड़ी, और दूसरे हाथ में एक पतली चपटी सी छड़ी जिसकी मदद से वह सर झुकाये सामने फर्श पर बिछी चटाई पर राब का बतासा बनाता जा रहा था। उसने सर उठाकर भोंबोल की ओर देखा तक नहीं। भोंबोल की पेट में उस समय चूहे दौड़ रहे थे। गरम राब की महक से उसके मुंह में पानी आ गया। लेकिन जैसे ही उसकी नज़र सामने रास्ते पर पड़ी उसकी सारी अकल गुम हो गयी। साइकिल वाला अब उसके करीब आ चुका था। अरे, ये तो चक्रवर्ती मोशाय के छोटे भाई षष्ठी काका हैं। षष्ठी काका ठेकेदारी करते हैं। काका ने ज़रूर उसे देख लिया होगा। फ़िर भी भोंबोल दौड़ कर दुकान के पीछे छिप गया। डर से उसके दिल की धड़कन तेज हो गयी थी।

दुकान के पीछे भांट का घना जंगल था। उसमें कुछ कवाछ के पौधे भी थे। एक पर भोंबोल का पैर पड़ गया। वह खुजली से पैर नोचने लगा। खुजलाते-खुजलाते वह दुकान की दीवार से सट कर खड़ा हो गया।

पीछे की तरफ था पानी से भरा धान का खेत। और दोनों ओर के रास्ते सुनसान पड़े थे। भागने का कोई भी उपाय नहीं है। फिर भी एक बार मन में आया कि खेत में उतर जाया जाय। पर पानी में जोंक होने का खतरा था। उसमें से एक भी पैर पर लग जाये तो.......। भोंबोल ने तय किया चलो देख ही लिया जाय काका क्या करते हैं। उसने अंगुली से चटाई में छेद किया और अंदर झांका। काका दुकान के बेंच से साइकिल टिका रहे हैं। हलवाई ने अब सर उठाया। नज़र पड़ते ही कहा 'प्रणाम दादा ठाकुर।' षष्ठी काका बेंच के किनारे बैठ गये, बोले- 'माकोम' एक चिलम तंबाकु बनाओ तो भाई।'

दुकानदार ने ऊंची आवाज़ में पुकारा -'अरे मादोब', मा-दो-ओ-ओ-ब, छौंड़ा रह-रह कर भाग जाता है। जब देखो तब स्टेशन पर जाकर बैठ जाता है।' काका बोले -'अरे अभी अभी देखा, यहीं तो खड़ा था।'

भोंबोल मन-ही-मन खिल-खिलाकर हंस दिया। काका ने उसे माधव समझा है। माखन

माकोम-माखन का अपभ्रंश है, मादोब-माधव का



बोला-''हां, लग तो ऐसा ही रहा है हमने भी देखा है-अच्छा, हाथ धोकर हम ही बना दे रहे हैं।'' काका ने 'अच्छा' कहकर, कोट के जेब से एक काले रंग की डायरी निकाली और फिर टोपी वाली एक पेंसिल निकालकर डायरी के पन्ने उलटने लगे।

उनके चेहरे का रुख दूसरी ओर था। भोंबोल ने देखा यही मौका है! उसने वहां से खिसककर रास्ता पकड़ लिया और सीधे गांव की ओर दौड़ पड़ा।

खूब लगी दौड़! भोंबोल दौड़ते हुए पीछे भी देखता जा रहा था। वह देखने का कोशिश कर रहा था कि काका क्या कर रहे हैं। काका अब भी वैसे ही बैठे हुए थे। यदि कहीं एकबार गर्दन उठाकर उसकी ओर देख लें तो ? बस एक बार मोड़ के किनारे उस बड़ी झाड़ी के पीछे पहुंच जाय तो छुटकारा मिले! पर मोड़ भी बहुत पास नहीं था। दौड़ते-दौड़ते उसकी सांसें अटक रही थीं। बस अब और कुछ ही हाथ का फ़ासला रह गया है। आखिर वह पहुंच ही गया!

झाड़ी से कुछ ही हाथ दूर एक कटहल का पेड़ था। भोंबोल उसके नीचे बैठकर हाफंने लगा। प्यास से उसका कंठ सूख गया था। यदि थोड़ा सा पानी मिल जाता तो कितना अच्छा लगता। पर पीने लायक पानी कहां? सामने धान के खेत में पानी तो है, पर उसे पीने से वह बिल्कुल बीमार पड़ जायेगा। गांव अभी भी आधा मील दूर था। पर उससे पहले ही रास्ते के किनारे एक घर दीख रहा है, घर के छप्पर से हल्का-हल्का धुआं निकल रहा है।

इतनी देर में धूप में काफ़ी गर्मी आ चुकी थी। शरद् ऋतु का धूप देह को भला लगता है, सिर को जलाता है, पर साथ ही मन को उदास भी करता है। भोंबोल ने सर उठाकर ऊपर की ओर देखा आसमान में काले सफेद बादल तैर रहे हैं, मानो झुंड के झुंड हंस पंख फैलाए दिगंत की



ओर उड़ते चले जा रहे हैं। गांव के ऊपर से, धान के खेतों के ऊपर , रास्तों और भोंबोल के सिर और देह पर अपनी कोमल छाया फैलाते वे चलते चले जा रहे हैं।

षष्ठी काका का डर अभी भी खत्म नहीं हुआ था। झाड़ी की आड़ लेकर भोंबोल उस घर की ओर बढ़ने लगा।

वहां पहुंचकर उसने पाया कि वह एक लोहारशाला है। हठर भरर, हठर भरर, भाथी हांफ रही थी। भट्ठी से आग की लपटें निकल रही थीं, मानो एक साथ चार-पांच सांप फन उठाकर फुफकार रहे हों-सों सों। लोहार हल का फाल, हंसिया व हंसुली गढ़ रहा है। उसके आस-पास तीन चार किसान उकड़ू बैठे उसे देख रहे हैं। भोंबोल की बहुत दिनों से इच्छा है कि वह एक बड़ा सा चाकू बनवाये। चाकू की धार इतनी तेज़ हो कि उंगली से छूते ही खच से कट जाए, पर उस समय उसने लोहार से चाकू की बात नहीं की, बस इतना ही बोला 'थोड़ा पानी पिलाइयेगा?'

लोहार के सिर पर एक मैला कपड़ा टोपी की तरह लपेटा हुआ था। कपड़े का शेष भाग पीछे जूड़े की तरह लटक रहा था। जो कपड़ा उसने पहन रखा था, वह भी झोल और कालिख से मलिन था, देह का रंग जले हुए लोहे जैसा पर मजबूत था। उसने संड़सी से पकड़कर हल का एक फाल आग में तपाते हुए उसकी ओर आंख उठाकर देखा। भोंबोल को उसने कभी पहले न देखा था। उसकी आंखों में हैरानी थी। पूछा-'तुम्हारा घर कहां है?'

भोंबोल बोला-'दुर्गापुर।'

'-दुग्गोपूर? कहां है दुग्गोपूर?'

भोंबोल ने पीछे की ओर उंगली से इशारा करते हुए कहा-'उस ओर। बहुत प्यास लगी है। पानी दीजिये।'

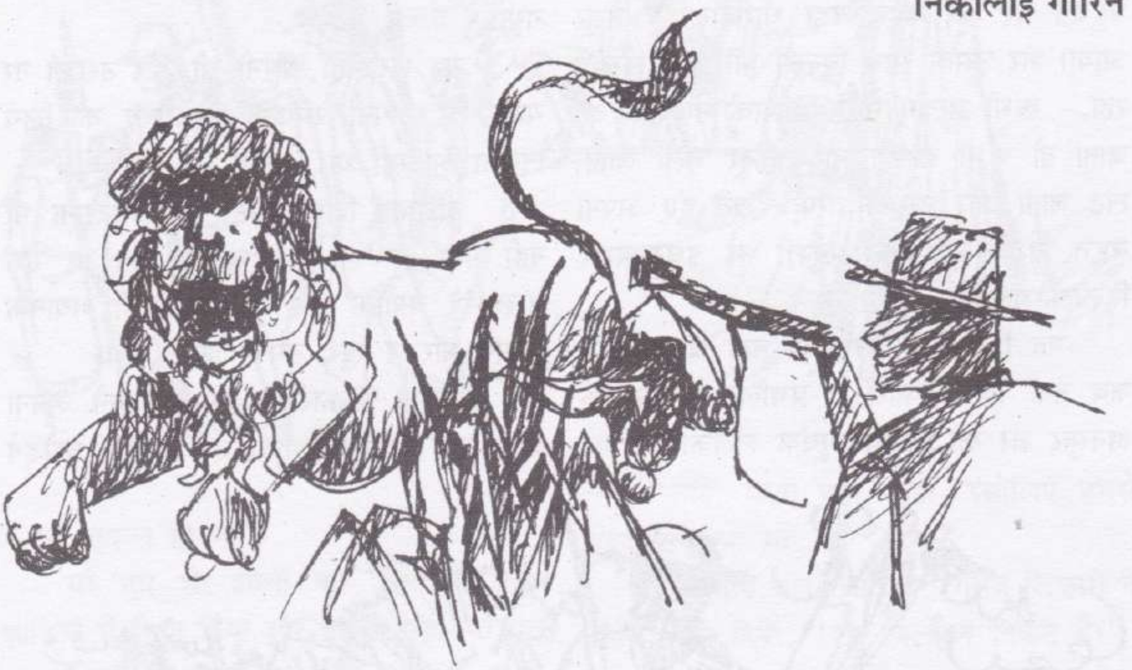
'पानी?' लोहार इधर-उधर देखने लगा। फिर फाल को आग पर रखकर एक किसान से बोला 'जरा भाथी चलाना भाई, प्यासे को तो पानी देना ही होता है।' वह उठकर कमरे के एक कोने में गया। वहां मिट्टी के कलश से एक छोटे से लोटे में पानी ढालने लगा। कलस, लोटा, लोटे का मालिक इन सभी को देखने के बाद भोंबोल की पानी पीने की इच्छा खत्म हो गयी थी पर प्यास के कारण वही पानी ठंडे बर्फ के समान उसके प्राणों को शीतल कर गया। पानी पीकर भोंबोल वहां बिल्कुल नहीं रुका। वहां से तुरन्त निकल वह गांव की दिशा में चल दिया।

(बंगला से अनुवाद : देवाशीष बराट)

कोरियाई लोककथा

शेरों का शिकारी

निकोलाई गारिन



बीस साल पहले खान–जोंडो प्रान्त के कील्चू नगर में शेरों के शिकारियों का एक संगठन था। बहुत ही अमीर लोग इस संगठन के सदस्य थे। एक ग़रीब नौजवान ने इस संगठन में शामिल होने और इसका सदस्य बनने की व्यर्थ ही कोशिश की।

''कहां घुसना चाहते हो तुम?'' अध्यक्ष ने कहा। ''क्या तुम नहीं जानते कि ग़रीब आदमी तो आदमी ही नहीं होता? जाओ, अपना रास्ता देखो।''

लेकिन ऐसा रूखा जवाब मिलने के बावजूद इस नौजवान ने अपना पेट काटकर भी पैसा जमा किया और इस्पात का वैसा ही, शायद दसरे शिकारियों से भी बेहतर एक बरछा बनवा लिया। और एक बार जब शिकारी लोग शेरों के शिकार के लिए पहाड़ पर गये तो वह भी चल दिया।

यह ग़रीब नौजवान एक गढ़े के क़रीब इन अमीर शिकारियों के पड़ाव में गया और एक बार फिर इनसे अनुरोध किया कि वे उसे अपने संगठन का सदस्य बना लें।

किन्तु ये लोग तो खूब मज़े से अपना वक़्त बिताते थे ओर ग़रीब आदमी से उन्हें क्या लेना–देना था। उन्होंने उसका मज़ाक़ उड़ाकर उसे फिर भगा दिया। तब नौजवान ने कहा :

"आप लोग यहां पियें-पिलायें, मज़े से वक़्त बितायें, मैं अकेला ही जाता हूं शिकार को।"

"अगर यही चाहते हो कि शेर तुम्हें फाड़ खाये," उन्होंने जवाब दिया, "तो जाओ, सिरफिरे!"

" तुम लोगों से दुतकारा जाने के बजाय शेरों का शिकार बन जाना कहीं बेहतर है।"

और वह जंगल में चला गया। घने वन में पहुंचने पर उसे बहुत बड़ा धारीदार शेर नज़र आया। शेर उसके साथ बिल्ली की तरह खेलता रहा – कभी छलांग मारकर उसके नज़दीक आ जाता तो कभी छलांग मारकर दूर चला जाता, लेट जाता और उसकी तरफ़ देखते हुए अपनी बहुत बड़ी पूंछ को खुशी से इधर-दधर हिलाता-डुलाता।

यह खिलवाड़ उस वक़्त तक चलता रहा, जब तक कि शिकारी ने प्रचलित परम्परा के अनसुार शेर को तिरस्कारपूर्वक ललकारकर यह नहीं कहा :

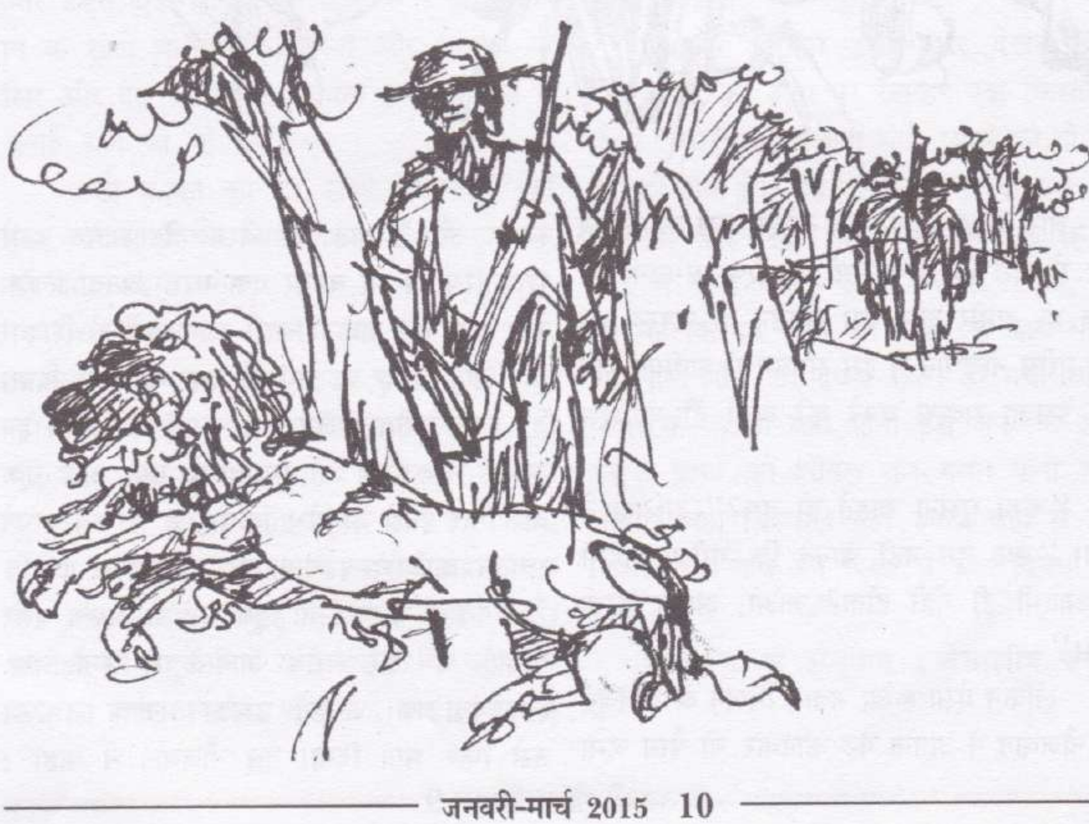
" लो, आ रहा है तुम पर मेरा बरछा!"

इसी क्षण शेर शिकारी पर झपटा और बरछे को अपने सामने देखकर उसे दांतों के बीच दबा लिया। लेकिन इसी वक़्त शिकारी ने असाधारण शक्ति से बरछे को शेर के गले में घुसेड़ दिया और शेर मुर्दा होकर जमीन पर गिर गया।

यह शेर नहीं, शेरनी थी और उसका नर यानी शेर अपनी संगिनी की मदद के लिये लपका आ रहा था।

नौजवान शिकारी को यह चिल्लाना भी नहीं पड़ा : "लो, आ रहा है तुम पर मेरा बरछा!", क्योंकि शेर उसे देखते ही भयानक छलांग मारकर खुद उसपर झपट पड़ा।

नौजवान शिकारी ने इसके सामने अपना बरछा कर दिया और फिर उसे गले में घुसेड़ने





में भी सफल हो गया।

मरे हुए शेर-शेरनी को उसने घसीटकर झाड़ियों में छिपा दिया और उनकी पूंछों को रास्ते पर रहने दिया, ताकि नजर आ सकें।

इसके बाद वह मौज करनेवाले अमीर शिकारियों के पास लौटा।

"कहो, बहुत से शेर मार डाले?"

"मुझे तो दो ही मिले हैं, लेकिन मैं उनसे पार नहीं पा सका और इसलिये आपकी मदद लेने आया हूं।"

"यह हुई न ढंग की बात - हमें ले जाकर दिखाओ।"

उन्होंने पीना-पिलाना बन्द किया और नौजवान शिकारी के पीछे-पीछे चल दिये। रास्ते में वे उस पर फबतियां कसते रहे।

"क्यों, मरना नहीं चाहा, इसीलिए हमसे मदद लेने आ गये...."

"चुपचाप चलते आइये," गरीब शिकारी ने इन्हें आदेश दिया, "शेर बिल्कुल निकट है।"

इन लोगों को चुप हो जाना पड़ा। अब वह इनके बीच मुखिया हो गया था।

"ये रहे शेर," उसने उन्हें शेरों की पूंछें दिखायीं।

तब वे सभी कतार बनार खड़े हो गये और चिल्लाये :

" लो, आ रहा है तुम पर मेरा बरछा!"

मगर मुर्दा शेर हिले-डुले नहीं।

तब गरीब शिकारी ने कहा :

"यह एक बरछा उनका काम तमाम भी कर चुका है। अब तो इन्हें सिर्फ शहर तक ले जाना है। इन्हें ले लीजिये और शहर ले जाइये।"

एक यूगोस्लावियाई लोककथा

बूढ़ा घोड़ा और शेर



एक आदमी के पास एक बूढ़ा घोड़ा था। उसके लिए अब हल जोतना और खींचना कठिन हो रहा था। जिससे उसका मालिक घोड़े को लेकर बहुत परेशान रहता था। उसे मज़बूत और स्वस्थ बनाने के लिए आदमी ने सोचा, क्यों न उसे किसी खुली जगह में छोड़ दिया जाये। इस तरह विचार कर वह घोड़े के पैर में लोहे की नाल ठुँकवाकर उसे नदी के पास वाले चरागाह में छोड़ आया।

घोड़ा खुली हवा में धीरे-धीरे चलता फिरता और हरी-हरी घास खाता। एक सप्ताह में ही वह स्वस्थ होने लगा और धीरे-धीरे उसका वजन भी बढ़ने लगा। अब वह उछलता-कूदता भी था।

एक दिन उधर एक शेर आ निकला। उसने घोड़े को देखा और चकित रह गया। यह कौन सा जानवर है?

''तुम कौन हो?'' उसने पूछा।

''घोड़ा! और तुम - तुम कौन हो?''

''मैं एक शेर हूँ। सभी जानवरों का राजा। मैं तुम्हें खा जाऊँगा।

''मुझे खाओगे,'' घोड़े ने कहा, ''तुम्हें ताकत की ज़रूरत है।''

शेर गुस्से में अपनी पूँछ फटकाकर दहाड़ा। ''मैं यहाँ का सबसे ताकतवर जानवर हूँ।''

''हा-हा-हा!'' घोड़ा हँसने लगा। ''हम भी देखें कि हममें से कौन ज्यादा ताकतवर है। चलो अपनी-अपनी ताकत को आजमाकर देख लेते हैं।''

''पर हम इसे आजमायेंगे कैसे?'' शेर ने पूछा।

''क्या तुम इस बड़े पत्थर को देख रहे हो?''

''हाँ, मैं देख रहा हूँ'' शेर ने कहा।

''फिर ठीक है। अब जो इस पत्थर से

चिंगारी निकालेगा, वही सबसे ज्यादा ताकतवर है।"

"ठीक है, ऐसा ही होगा।" शेर ने अपनी सहमति जतायी।

शेर अपने पंजों से पत्थर पर प्रहार करने लगा। वह प्रहार करता ही रहा पर चिंगारी नहीं निकली और तब गुस्से में आकर उसने पत्थर पर इतनी जोर से पंजा मारा कि उसके नाखून उखड़ गये, चिंगारी फिर भी नहीं निकली।

"हा-हा-हा।" घोड़ा जोर-जोर से हँसने लगा और बोला, "तुम कमजोर और बूढ़े हो गये हो फिर भी तुम अपने को राजा कहते हो। अब देखो, देखो मैं कैसे इससे चिंगारी निकालता हूँ।"

घोड़ा पत्थर के पास आया और उसने अपने मज़बूत लोहे के जूते पत्थर पर पटके, चिंगारियाँ निकल पड़ीं और चारों ओर छिटकने लगीं।

"ठीक है, ठीक है!" शेर ने अपने मन में सोचा कि इसके साथ कोई मज़ाक नहीं चल सकता।

वह कुछ कहे बिना चुपचाप जंगल की ओर भाग चला। रास्ते में एक लोमड़ी से उसकी मुलाकात हो गयी।

"नमस्ते महाराज! आज आप कहाँ से घूमकर आ रहे हैं? लोमड़ी ने आदरपूर्वक पूछा "वहाँ आपने क्या देखा, क्या सुना?"

"मैं नदी के पास वाले हरे चरागाह पर घूमने गया था, वहाँ मुझे एक ताकतवर जानवर मिला" शेर ने जवाब दिया।

"कौन था वह?" लोमड़ी ने पूछा।

"घोड़ा।"

"हुम्म!" लोमड़ी ने कहा। "इस जानवर को मैंने सिर्फ़ देखा ही नहीं है कई बार इससे अपना पेट भी भरा है।"

"यह सच नहीं हो सकता। यह बिल्कुल नामुमकिन है।" शेर ने नाराज होकर कहा।

"फिर तो आज आप मेरे साथ चलिए आप स्वयं देखियेगा कि मैं उसे किस तरह पूरा का पूरा खा जाऊँगी, महाराज।"

शेर और लोमड़ी साथ-साथ चरागाह तक गये।

"अच्छा, तो घोड़ा वहाँ है?" लोमड़ी ने पूछा।

"उधर झाड़ियों के पीछे टहल रहा है।"

"मैं यहाँ से उसे देख नहीं पा रही हूँ।" लोमड़ी बोली।

शेर ने लोमड़ी को अपने पंजों में दबाया और उसे गर्दन से उठाकर अपने सिर पर बैठा लिया।

"अब तुम उसे देख सकती हो?" शेर ने कहा।

पर कोई उत्तर न पाने पर शेर ने उसकी तरफ देखा, उसकी साँस नहीं चल रही थी। जानवरों के राजा शेर के पंजे की पकड़ में उसका दम घुट गया था और उसी क्षण उसकी मौत हो गयी थी।

शेर ने लोमड़ी को जमीन पर उतारा और बोला : "अब तुम नहीं समझ सकती? हालाँकि तुम उसे सिर्फ़ देखने भर से ही इतना डर गयी। अब अगर उसने हम लोगों को यहाँ देख लिया तो वह हम दोनों को ही खा जायेगा।"

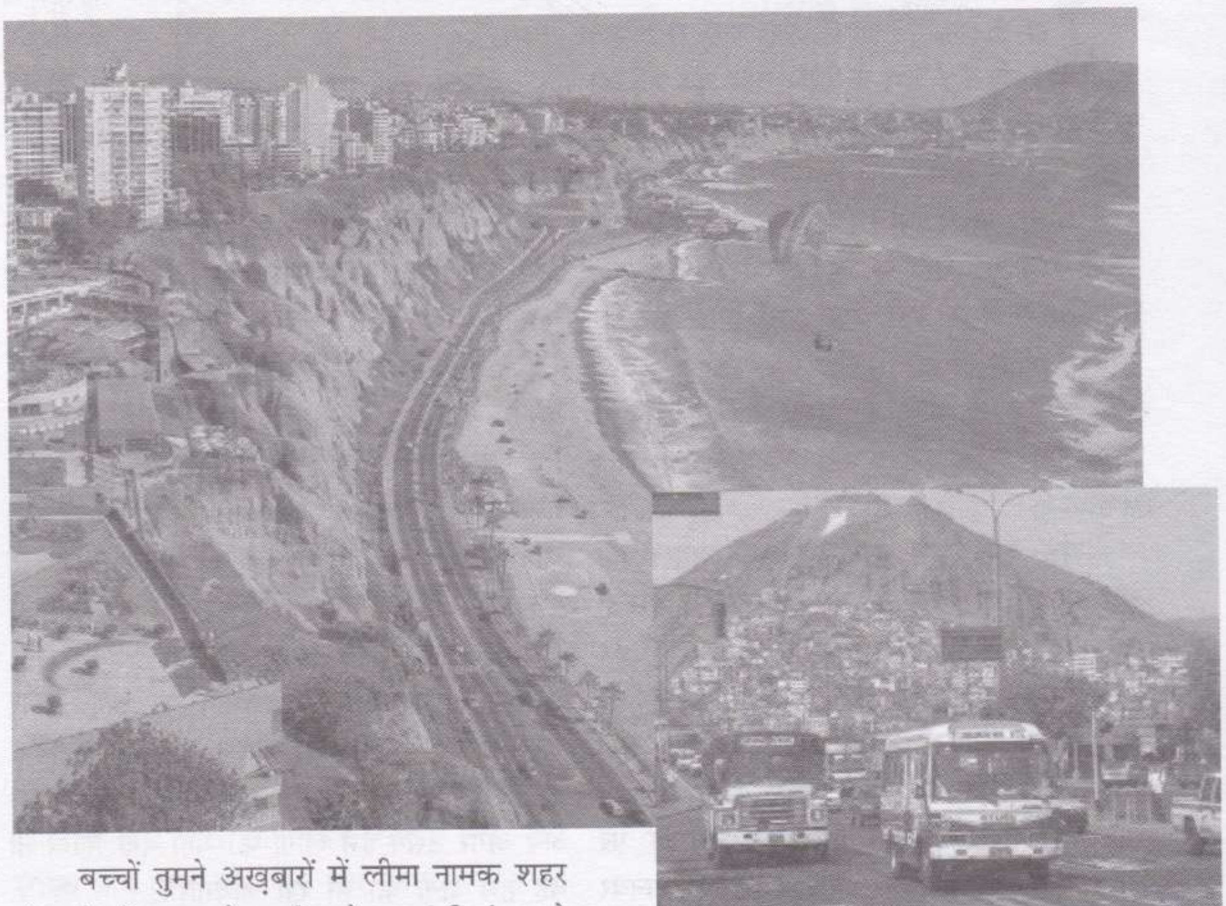
शेर घोड़े से इतना डरा हुआ था कि वह उस जगह से बहुत दूर भाग गया और दुबारा उधर कभी नहीं फटका।

अनुवाद : शाकंभरी

जानकारी

लीमा

समुद्र के किनारे और मरुस्थल के बीच बसा एक खूबसूरत शहर



बच्चों तुमने अख़बारों में लीमा नामक शहर के बारे में पढ़ा होगा। पिछले साल दिसंबर के महीने में वहाँ जलवायु परिवर्तन के विषय पर संयुक्त राष्ट्र द्वारा एक सम्मेलन आयोजित किया गया था। लीमा दक्षिण अमेरिकी महाद्वीप में स्थित देश पेरू की राजधानी है और यह पेरू का सबसे बड़ा शहर भी है। लीमा पेरू ही नहीं बल्कि समूचे दक्षिण अमेरिकी महाद्वीप का एक प्रमुख औद्योगिक एवं व्यावसायिक केन्द्र है। आओ हज़ारों किलोमीटर दूर बसे इस शहर के बारे में थोड़ा और विस्तार से जाना जाये!

क्या तुम्हें पता है कि मई-जून के महीनों

में जब हम लोग पसीने से तर हो रहे होते हैं तो उस समय लीमा के लोग ठण्ड से ठिठुर रहे होते हैं और दिसंबर–जनवरी के महीने में जब हम रजाई में दुबके रहते हैं तो लीमा में लोग गर्मी से बेहाल होते हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि लीमा पृथ्वी के दक्षिणी गोलार्द्ध में स्थित है। दक्षिण अमेरिका की विशालकाय पर्वतमाला एण्डीज़ से निकलने वाले राइमैक नदी लीमा शहर से होकर गुज़रती है। लीमा के बीचोंबीच और उसके आसपास ढेरों छोटी–छोटी पहाड़ियाँ हैं लेकिन लीमा में पेड़–पौधों की हरियाली बहुत कम देखने को मिलती है। इसकी वजह यह है कि लीमा दक्षिण अमेरिका के मरूस्थलीय इलाके के बीचोंबीच स्थित है। इसीलिए लीमा के लोग बारिश के लिए भी तरस जाते हैं।

मरूस्थलीय क्षेत्र में स्थित होने के बावजूद लीमा सदियों से इंसानी क्रियाकलापों और संघर्षों का केन्द्र रहा है। 1821 में पेरू के स्पेनी साम्राज्य से स्वतंत्र होने के बाद से ही यह पेरू की राजधानी एवं प्रमुख औद्योगिक केन्द्र के रूप में विकसित हुआ है। प्रशान्त महासागर के तट के निकट बसे लीमा की जनसंख्या अब 1 करोड़ के आसपास पहुँच चुकी है और पेरू की लगभग एक तिहाई आबादी इसी शहर में रहती है। लीमा दुनिया के सबसे जनसंख्या घनत्व वाले शहरों में से एक है। पानी के जहाज से लेकर सीमेंट, केमिकल, प्लास्टिक, कपड़े, फर्नीचर सबकुछ इस शहर की मेहनतकश जनता यहाँ के 7000 से ज़्यादा कारखानों में बनाती है। इसके अतिरिक्त यहाँ तेल शोधन एवं खाद्य प्रसंस्करण का काम भी होता है।

लंबे इतिहास के दौरान दुनिया के अलग–अलग हिस्सों से अलग–अलग नस्लों के लोगों के लीमा में आकर बसने की वजह से यहाँ की आबादी में आदिवासियों के अलावा यूरोपीय, अफ्रीकी एवं एशियाई मूल के लोगों का मिश्रण है। इस मिश्रित आबादी की छाप यहाँ की मिश्रित संस्कृति, खान–पान, वास्तुकला, कला एवं संगीत के क्षेत्रों में साफ़ देखी जा सकती है। लीमा पाक कला के मामले में अमेरिका की राजधानी माना जाता है। यहाँ के लोग माँसाहारी होते हैं और वे चिकन, बीफ़ और समुद्री जीवों से बने लजीज़ व्यंजन बनाते हैं। यहाँ की मुख्य भाषा स्पेनी है। लीमा के लोग आमतौर पर ज़िन्दादिल और मिलनसार होते हैं। हाल के वर्षों में पेरू के ग्रामीण क्षेत्रों में लोग खेती आदि धन्धों से बड़ी संख्या में उजड़कर राजधानी लीमा की ओर भाग आये हैं जिससे शहर में शहरवासियों और गांवों से उजड़कर आये हुए लोगों में रहने–खाने की हर चीज को लेकर खींचातानी भी मची रहती है।

लीमा शहर के विभिन्न इलाकों में घूमने पर एक चीज़ जो सबसे अधिक खटकती है वह है यहाँ के अमीरों और ग़रीबों के बीच बहुत चौड़ी खाई। जहाँ एक ओर लीमा में गगनचुंबी इमारतें, आलीशान शॉपिंग मॉल, लक्ज़री अपार्टमेंट, एक्सप्रेसवे, पाँच सितारा होटल, रेस्तराँ आदि देखने को मिलते हैं वहीं दूसरी ओर नरक जैसी बस्तियों की भरमार है जहाँ मेहनत–मज़दूरी करने वाले लाखों लोग रहने के लिए मजबूर हैं। ग़रीबों की बस्तियाँ आम तौर पर पहाड़ियों पर बसी होती हैं। इन बस्तियों में न तो ढंग के मकान हैं, न ही पीने लायक साफ़ पानी और न ही जलनिकासी की उचित व्यवस्था। हमारे देश की तरह वहाँ भी बच्चे भुखमरी, कुपोषण और बीमारियों के शिकार हैं। हमारे देश की तरह वहाँ भी सरकारें लोगों की जरूरतें और सुविधाओं को पूरा नहीं कर पा रही हैं।

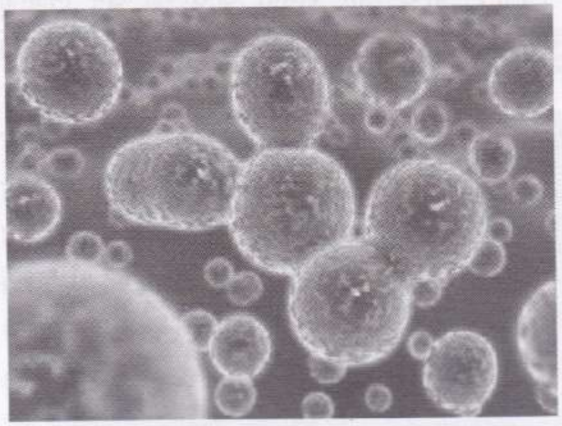
आनन्द

जानकारी

बैक्टीरिया

हर जगह मौजूद होने वाले प्राणी

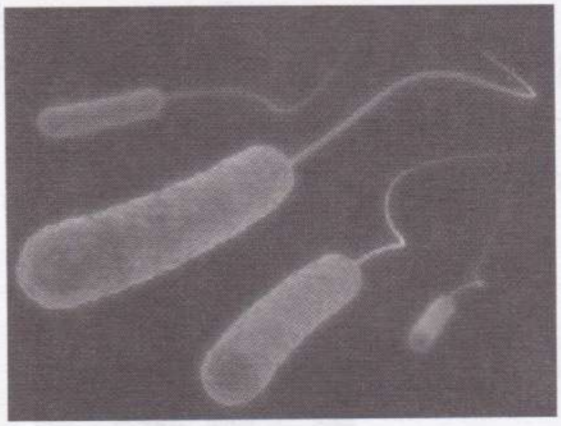
सिमरन



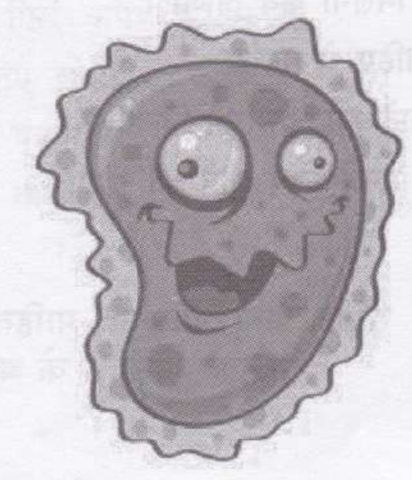
इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप से देखने पर बैक्टीरिया ऐसे दिखते हैं

क्या सिर्फ़ वो चीज़ें जो हम आँखों से देख सकते है असली होती हैं ? क्या ऐसी भी कोई चीज़ होती है जो आँखों से दिखती तो नहीं पर मौजूद होती हो? सोचो, सोचो थोड़ा सा और सोचो! नहीं मालूम? इस पूरे संसार में कुछ चीज़े इतनी छोटी और सूक्ष्म होती है की वह हमे नंगी आँखों से नहीं दिखती उन्हें देखने के लिए अलग अलग तरह के वैज्ञानिक उपकरणों की मदद लेनी पड़ती है। इसी श्रेणी में एक प्रकार के जीव आते हैं जिन्हे हम बैक्टीरिया कहते हैं। बैक्टीरिया एक ही कोशिका वाले सूक्ष्म जीव होते है जो पृथ्वी पर पिछले 400 सालो से मौजूद हैं। यह दुनिया के सबसे पुराने जीवाश्म (फौसिल) में से एक है। मालूम है न फौसिल क्या होते है? हमारा घर यानी हमारी पृथ्वी हज़ारो साल पुरानी है और इतिहास में अलग अलग समय पर पृथ्वी पर भिन्न भिन्न प्रकार के पेड़, पौधे, जानवर आदि मौजूद थे। पृथ्वी की विकास की यात्रा में इनमे से कई प्राणी विशाल चट्टानों के नीचे दब गए और उनके अवशेष बच गए। इन अवशेषों को खुदाई कर पृथ्वी से निकला गया और वैज्ञानिकों ने इनके अध्ययन से यह पता लगाया की आज से हज़ारों वर्ष पहले पृथ्वी पर किस तरह के प्राणी और पौधे मौजूद थे। बैक्टीरिया हर जगह मौजूद होते है, हवा में, मिटटी में, पानी में, पौधों में, जिस किताब को तुम पढ़ रहे हो उसके पन्नों पर, तुम्हारी नाक पर, हाथों पर और यहाँ तक की तुम्हारे पेट के अंदर भी!! शायद ही कोई ऐसी जगह हो जहाँ यह छोटे छोटे प्राणी मौजूद न हों। इन सब जगह मौजूद सूक्ष्म प्राणियों के बारे में हम इस लेख के ज़रिये और जानेंगे।

इलेक्ट्रान माइक्रोस्कोप एक वैज्ञानिक यंत्र होता है जिसके ज़रिये बेहद सूक्ष्म चीज़ों को भी देखा जा सकता है। असल में बैक्टीरिया का कोई रंग नहीं होता, इन तस्वीरों में दिखने वाले रंग कंप्यूटर से बनाये गए हैं ताकि बैक्टीरिया के आकार को समझने में आसानी हो सके। बैक्टीरिया की कोशिका की बनावट बड़ी खास होती है। बैक्टीरिया में सिर्फ एक ही कोशिका होती है जिसका कोई नाभिक (केन्द्र) नहीं होता। पौधों की कोशिका की तरह बैक्टीरिया में भी कोशिका



भित्ति (सेल वाल) होती है जो कि बैक्टीरिया को आकार देती है। बैक्टीरिया हर तरह के आकार के होते हैं जिनमे से तीन मुख्य तरह के आकार - छड़ीनुमा, कुंडलाकार, गोलाकार हैं। कुछ बैक्टीरिया की पूँछ भी होती है जिससे वह तैर पाते है, उनकी पूँछ को फ्लैजेल्ला कहा जाता है। तुमने शायद टीवी या रेडियो पर विज्ञापनों में सुना होगा की बैक्टीरिया के कीटाणु आपको बीमार कर सकते हैं इसिलए खाना खाने से पहले और शौच के बाद हाथ धोने चाहिए। तो क्या सभी बैक्टीरिया बुरे होते हैं? इस सवाल का जवाब है नहीं! बैक्टीरिया हमारी धरती के अभिन्न अंग है जो मनुष्य जीवन के अस्तित्व के लिए बेहद ज़रूरी हैं। सभी बैक्टीरिया बीमारी नहीं फैलाते, कुछ बैक्टीरिया तो हमारी बहुत मदद करते है। जैसे **सयानोबैक्टीरिया** नाम का बैक्टीरिया सूरज की रौशनी से ऑक्सीजन (जिस गैस की ज़रूरत हम मनुष्यों को सांस लेने के लिए होती है) बनाते हैं, मिट्टी में रहने वाले कुछ बैक्टीरिया हमारे बहुत काम आते हैं। **रिज़ोबियम** नाम का बैक्टीरिया से मिट्टी को नाइट्रोजन (एक प्रकार की गैस) मिलता है जिससे मिट्टी की उपजाऊ शक्ति बढ़ जाती है। **डिकम्पोज़र्स** (जटिल पदार्थों को छोटी इकाइयों में तोड़ने वाले) नाम के बैक्टीरिया मृत जानवरों और पौधों के ऊतक को तोड़ कर मिट्टी बनाने और मृत ऊतकों से निजात पाने में मदद करते हैं। हमारे खाने में भी बैक्टीरिया होते हैं, जैसे की दही में। हमारे शरीर के विभिन्न अंगो में अलग अलग तरह के बैक्टीरिया पाये जाते हैं। हमारे पेट में मौजूद बैक्टीरिया खाने को पचाने में हमारी मदद करता है। कुछ बैक्टीरिया तो हमारे इम्युनिटी सिस्टम को मजबूत कर बीमारियों से लड़ने और बचाव में हमारी मदद करते हैं। मगर जैसे हर चमकती चीज़ सोना नहीं होती ठीक वैसे ही सभी बैक्टीरिया हमारे मित्र नहीं होते। कुछ बैक्टीरिया रोगजनक भी होते है वह हमें बीमार कर देते है। तुम्हें भी अपने मम्मी या पापा से बारिश के बाद कीचड़ में खेलने पर डांट पड़ती होगी, वो तुमसे जरूर कहते होंगे, 'बीमार हो जाओगे!'। वह सच कहते है क्योंकि मिटटी में भी रोगजनक बैक्टीरिया हो सकते हैं। किसी भी खाने की वस्तु जैसे फलों पर भी बैक्टीरिया हो सकते हैं इसलिए फल या सब्ज़ी खाने से पहले उसे ज़रूर धोना। तो देखा तुमने आँखों से ओझल बैक्टीरिया की यह दुनिया कितनी बड़ी है।



कविताएं

बच्चों ने लिखी कविता



दुखी तोता

पिंजरे में तोता है
दुखी कितना रहता है
उन्मुक्त गगन का तोता है
पिंजरे में बंद रहता है
क्या तुम्हें पता है, ..
यह सोचता क्या रहता है?
...कहीं दूर मैं उड़ जाऊं
आसमान को छू कर आऊं
चू-चू-चू-चू करते बच्चे,
मन को लगे कितने अच्छे
लेकिन मिलेगी कब आज़ादी
नहीं चाहिए ये बर्बादी
मिले चाहे हमें नीम की निम्बोली
वह भी हमारे लिए जीने की गोली

सीमा, गीता, प्रियंका, माहित व
सुहेल- कक्षा 5 के बच्चे

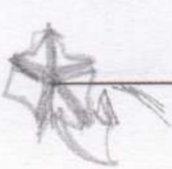
गीत जिन्दगी



ला रा लप्पा
ला रा लप्पा
ताक धिन मैया बप्पा
ठोकर खाना
गिरना उठना
सँभल सिखाती
सबक ज़िन्दगी
पक्का।
देना गच्चा
पाना गच्चा
गढ़ना
झूठा सच्चा
नयी चिनायी
रंग रंगायी
जतन जो
सारे
साज सपन के,
नहीं हैं कोरे गप्पा।



-बेबी



बसन्त पंचमी के दिन महाकवि 'निराला' की जयन्ती मनायी जाती है। इस बार यह 24 जनवरी का दिन था। इस अवसर पर यह मजेदार कविता तुम्हारे लिए

गर्म पकौड़ी



सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

गर्म पकौड़ी–
ऐ गर्म पकौड़ी,
तेल की भुनी
नमक मिर्च की मिली,
ऐ गर्म पकौड़ी!
मेरी जीभ जल गयी
सिसकियां निकल रहीं
लार की बूंदें कितनी टपकीं,
पर दाढ़ तले दबा ही रक्खा मैंने
कंजूस ने ज्यों कौड़ी,
पहले तूने मुझको खींचा,
दिल लेकर फिर कपड़े-सी फींचा,
अरी, तेरे लिए छोड़ी
मध्याह्न की पकाई
मैंने घी की कचौड़ी।

मेरा बचपन

मक्सिम गोर्की

मक्सिम गोर्की रूस के महान साहित्यकार थे। उनकी कहानियां और उपन्यास भावनाएं और विचार जगाते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्होंने आराम से अपने कमरे में बैठे-बैठे ही कहानियां नहीं लिख डालीं बल्कि बाहर निकलकर लोगों से घुले मिलें, उनकी जिन्दगीं की खुशियां, तकलीफें और परेशानियां नजदीक से देखीं और समझा भी। समाज और जीवन के गहरे अनुभव से निकली उनकी कहानियां हमारे ऊपर बड़ा गहरा प्रभाव छोड़ती हैं। 29 मार्च को उनका जन्म दिवस है। इस अवसर पर हम उनके उपन्यास 'मेरा बचपन' का वह अंश दे रहे हैं जिसमें बचपन की यादगार शरारतें हैं।

चंगा होने के बाद मैं अच्छी तरह समझ गया कि इवान का हमारे घर में खास स्थान है। नाना जैसे उपने बेटों पर अक्सरबिगड़ते रहते थे, उस तरह इवान पर नहीं। उसकी अनुपस्थिति में जब भी उसकी चर्चा चलती, तो वह सिर हिलाकर और आंखें मटकाकर कहते :

"इवान पूरा शैतान का बच्चा है, लेकिन उसकी उंगलियों में कमाल है। वह बेजोड़ है।"



मक्सिम गोर्की

मेरे मामा लोग भी इवान के साथ मेल से रहते थे। ग्रिगोरी मिस्तरी की तरह उससे कभी मज़ाक नहीं करते थे। बेचारे मिस्तरी को लगभग हर रोज़ उनके बेहूदा मज़ाकों का शिकार होना पड़ता था। कभी वे उसकी कैंची की बेंट चुपके से गर्म कर देते, कभी कुर्सी में कांटी खोंस देते, या कभी गलत रंग के कपडे सटाकर रख देते। कम सूझने की वजह से बेचारा सब को एक ही में सी देता था और उसे नाना की डांट सहनी पड़ती थी।

एक दिन भोजन के बाद मिस्तरी रसोईघर की बेंच पर सो रहा था। उन लोगों ने चुपके से उसके चेहरे पर गहरा लाल रंग पोत दिया। कई दिन तक उसका चेहरा बन्दर जैसा बना रहा। उजली दाढ़ी की पृष्ठभूमि में उसके चश्मे के काले शीशे धुंधली-सी आभा दिया करते थे, बीच में रंगी हुई लाल नाक ऐसी लगती, जैसे जीभ लटक रही हो।

बुड्ढे को छकाने क लिए मेरे मामा लोग हर रोज़ कोई न कोई नयी बात ढूंढ निकालते, लेकिन वह कुछ भी न बोलता। केवल अपने आप बुदबुदाता रहता और कैंची, इस्तरी, अंगुस्ताना

या चिमटा उठाने के पहले उंगलियों को थूक से अच्छी तरह तर कर लेता। यह एक ऐसी आदत बन गई कि भोजन के वक्त भी कांटा या छुरी उठाने के पहले वह उंगलियों को थूक से भिगो लेता। लड़के इसपर खूब हंसते। हाथ जलने पर उसके चौड़े चेहरे पर पानी की लहर की तरह सिकुड़नों का गोल घेरा फैल जाता और भौंहों को धनुषाकार बनाता हुआ गंजी खोपड़ी के ऊपर गायब हो जाता।

नाना का अपने बेटों के ऐसे ''मज़ाक'' के बारे में क्या ख्याल था, यह मुझे याद नहीं, लेकिन नानी मुक्का तानकर उन्हें खूब डांटती थी,

''बेहया, बदमाश कहीं के!''

इवान के पीठ पीछे मेरे मामा लोग उसकी खूब शिकायत करते और उसे चोट्टा और कामचोर आदि बताते।

मैंने नानी से एक दिन इसका कारण पूछा। वह बोली,

''दोनों इस ताक में हैं कि रंगेरेजी के उनके अलअ-अलग कारखाने बनने पर इवान उन्हीं के यहां नौकरी करे, इसलिए वे एक दूसरे को यह जताने की कोशिश करते हैं कि वह किसी काम का नहीं है। दोनों बड़े धूर्त हैं। साथ ही उन्हें यह भी डर है कि इवान उनके पास जाने के बजाय, यहीं, तेरे नाना के साथ रहना पसन्द करेगा। तेरे नाना के मन में कुछ और ही चालाकी है। वह इवान को लेकर तीसरा कारखाना खोल सकते हैं। अगर ऐसा हुआ, तो तेरे मामाओं के लिए तो अच्छा नहीं होगा।''

हंसते हुए उसने फिर कहा,

''इन सबों की धूर्तता देखकर भगवान को भी हंसी आती होगी। तेरे नाना उन्हें चिढ़ाने के

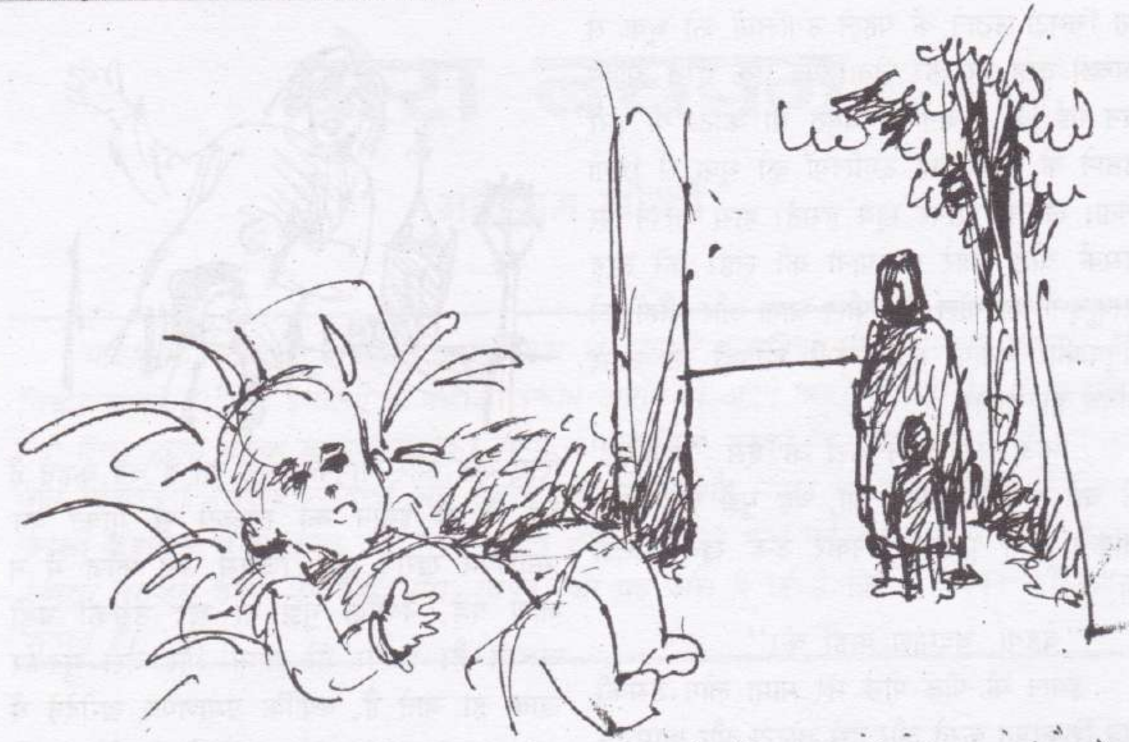


लिए एक और शिगूफा छोड़ देते हैं वह कहते हैं कि मैं तो इवान को रंगरूटी से मुक्ति का प्रमाणपत्र खरीद दूंगा, जिससे उसे फौज में न जाना पड़े, क्योंकि मुझे तो खुद उसकी बड़ी जरूरत है। इसपर तेरे मामा और जल-भुनकर खाक हो जाते हैं, क्योंकि प्रमाणपत्र खरीदेने में ढेर-सा रुपया लग जायेगा, जो वे अपनी गांठ से निकालना नहीं चाहते।''

स्टीमर-यात्रा के दिनों की तरह अब मैं फिर नानी के साथ रहने लगा था। हर रोज़ रात को वह मुझे कहानियां सुनाया करती। ये कहानियां या तो परियों की होती या खुद नानी के जीवन की। वे भी परियों की कहानियों से कम दिलचस्प न थीं। पर जब वह घर के झंझटों का, जैसे नाना की जायदाद के बंटवारे या नया मकान खरीदने के नाना के इरादे का जिक्र छेड़ देती, तो उसका स्वर व्यंग्यात्मक और निरपेक्ष हो जाता, मानो वह गृहस्थी की मालकिन नहीं कोई पड़ोसिन हो।

उसी से मुझे मालूम हुआ कि इवान के मां-बाप का पता नहीं है। वसन्त ऋतु की एक रात को पानी बरस रहा था, उसी दिन वह फाटक के पास की बेंच पर पड़ा मिला था। नानी ने रहस्य भरे स्वर में कहा,

'' चादर में लिपटा वह बेंच पर यों ही पड़ा



था – पाले से ऐसा सर्द कि आंख भी नहीं खोल सकता था''

'' लोग बच्चों को इस तरह फेंक क्यों देते हैं?'' मैंने सवाल किया।

नानी ने जवाब दिया, ''कुछ मांओं को दूध नहीं उतरता और न बच्चे को खिलाने के लिए और कुछ होता है, तो वे पता लगाती हैं कि किस घर में बच्चा होकर मर गया है। वहीं वे अपने बच्चे को ले जाकर छोड़ आती हैं।''

बालों में कंघा फेरते हुए वह एक क्षण को रुक गयी और फि छत ताकते हुए विषादपर्ण स्वर में बोली,

''यह सब गरीबी के कारण होता है, बेटे! कुछ लोग इतने गरीब होते हैं कि उनकी दुर्दशा का वर्णन करना सम्भव नहीं। इसके अलावा शादी के बिना बच्चा होना कलंक समझा जाता है। तेरे नाना का कहना था कि बच्चे को पुलिस में दे दिया जाये, मगर मैंने कहा, नहीं, भगवान ने इसे हमारे मरे हुए बच्चों की जगह भेजा है ... मैंने अपने गर्भ से अठारह सन्तानों को जन्म दिया। अगर वे बचते, तो आज अठारह घरों का कुनबा होता हमारा– पूरा एक मुहल्ला– चौदह ही वर्ष की उम्र में मेरी शादी हुई थी। पन्द्रहवां पूरा होने के पहले ही मेरी पहली सन्तान पैदा हुई, लेकिन भगवान को मेरी गोद के बच्चे बहुत प्यारे थे। एक-एक कर वह उन्हें उठाता गया। सब फरिश्ते बन गये। मुझे दुख भी होता और खुशी भी।''

कुछ दिन पहले एक देहाती सेर्गाच के जंगल से एक भालू पकड़कर हमारे आंगन में लाया था। रात की पोशाक में खुले लम्बे बालों में लिपटी नानी मुझे उसी भालू जैसी लग रही थी। ''इवान को पाकर मुझे बड़ी खुशी हुई क्योंकि तेरे जैसे निर्बल, असहाय बच्चों पर मुझे बड़ी ममता होती है। ....बचपन में मैं उसे गुबरैला कहा करती थी, क्योंकि वह गुबरैले की तरह जमीन पर रेंगता

और भन-भन किया करता था। तू उसके साथ मेल से रहा कर और उसे प्यार किया कर, क्योंकि वह दिलका बड़ा अच्छा है।''

यह कहने की ज़रूरत न थी, क्योंकि मैं इवान को पहले से ही प्यार करने लगा था। उसके आश्चर्यजनक करतबों पर मैं सदा मुग्ध रहता था।

शनिवार की शाम को नाना बच्चों को हफ्ते भर के दौरान की गयी शरारतों की सजा देकर प्रार्थना के लिए गिरजाघर चले जाते, तो रसोईघर में जश्न का ऐसा समां छा जाता कि बयान से बाहर। इवान अलावघर के पीछे से बहुत से तिलचट्टे पकड़ लाता और उन्हें तागे की लगाम डालकर कागज़ की स्लेज में बांध देता। फिर 'घोड़ों' की वह चौकड़ी खाने की मेज पर, जिसे रगड़-रगड़कर बहुत अच्छी तरह साफ़ किया गया होता था, दौड़ने लगती थी।

छोटी-सी लकड़ी से तिलचट्टे को हांकते हुए इवान उत्तेजित आवाज़ में कहता :-'यह बड़े पादरी साहब की चौकड़ी है। उन्हीं को लाने जा रही है।'

इसके बाद एक तिलचट्टे की पीठ पर कागज चिपकाकर उसे गाड़ी के पीछे दौड़ा देता और कहता :

'पादरी साहब का थैला घर पर ही छूट गया था। बेचारे चेले को वही लाने के लिए दौड़ाया गया है।'

इसके बाद एक और तिलचट्टे को लेकर वह उसके पैर बांध देता, जिसकी वजह से वह सिर के बल घिसटकर चलने लगता था। खुशी से तालियां पीटकर वह घोषणा करता :

'और यह हैं छोटे पादरी साहब। बेचारे शाम की प्रार्थना के लिए शराबखाने से चले जा रहे हैं।'



इवान को चूहे पालने का बड़ा शौक था। उन्हें वह तरह-तरह की कसरतें और खेल सिखाता था। तिलचट्टे के बाद अक्सर चूहों की कसरत शुरू हो जाती। एक चूहा पिछली टांग पर खड़ा होकर आदमी की तरह चलने लगता, उसकी लम्बी दुम पीछे लोटती और गोल आंखें मसखरों की तरह मटमटाती होतीं। अपने चूहों को वह बहुत प्यार करता था। उन्हें अपनी छाती से चिपकाये रखता, अपने मुंह से उन्हें चीनी फंकाता और चूमकर बड़े इतमीनान से हम लोगों को समझाता था :

'चूहा बड़ा बुद्धिमान और नेक होता है। घर में जो बौने भूत रहते हैं, वे चूहों को बड़ा प्यार करते हैं। जो उनके चूहों को खाना देता है, उसे वे किसी तरह की तकलफ नहीं देते...'

इवान ताश और पैसों के बहुत-से खेल जानता था। बच्चों के बीच वह बच्चों की तरह हिलमिल जाता था। उसकी किलकारी बेजोड़ थी। एक दिन ताश में उसे लगातार 'चोर' बनना पड़ा। आखिर में वह रोनी सूरत बनाकर भाग खड़ा हुआ। बाद में उसने नाक सुड़कते हुए मुझसे कहा :



'मैं सब कुछ जानता हूं। वे लोग ईशारेबाजी कर रहे थे और मेज के नीचे चुपके से एक दूसरे को पत्ता थमा देते थे। ऐसा भी कहीं खेल होता है? धोखेबाजी में मैं खुद भी किसी से कम नहीं हू...'

उसकी उम्र 19 साल की थी, लेकिन उसका शरीर हम चारों भाइयों को मिलाकर भी इक्कीस पड़ता था।

छुट्टियों के दिन शाम को जब नाना और मिख़ाईल मामा लोगों से मिलने-मिलाने चले जाते थे, तब इवान का जौहर देखने को मिलता। घुंघराले, बिखरे बालों वाले याकोव मामा गिटार लेकर रसोईघर में आ जाते। नानी नाश्ते-पानी का इंतजाम कर देती। खाने के सामानों की कमी न होती। हरी बोतल में, जिसपर लाल फूल बने हुए थे, वोद्का ढाली जाती। इवान अपनी इतवारवाली पोशाक में लट्टू की तरह थिरकना शुरू कर देता। मिस्तरी ग्रिगोरी भी चुपके से कमरे में आ जाता। उसके काले चश्मे में रोशनी प्रतिबिम्बित होती रहती। हम लोगों की धाई येव्गेनिया भी आ धमकती। लाल चेचकरू चेहरे वाली येव्गेनिया घड़े की तरह गोल-मटोल थी, उसकी छोटी-छोटी आंखों में चालाकी झलकती थी और गले का स्वर गम्भीर मद्धिम था। कभी-कभी उस्पेंस्की गिरजाघर के अत्यधिक बालों वाले छोटे पादरी भी आ जाया करते थे। उनके अलावा कुछ और अजनबी लोग, जिन्हें देखकर मुझे न जाने क्यों तरह-तरह की मछलियों की याद आया करती थी, इस महफिल में शरीक हुआ करते थे।

हर आदमी खूब खाता, खूब पीता और रह-रहकर लम्बी सांसे छोड़ता। बच्चों को उपहार और हल्की मीठी शराब का एक-एक जाम भी दिया जाता। धीरे-धीरे पूरे मजमे पर उल्लास का रंग छा जाता। रसोईघर में हंसी-खुशी का हुड़दंग मच जाता।

कहानी

कंप्यूटर और चीकू



चंपक वन की खूबसूरत शाम थी। सभी जानवरों के बच्चे खेल-कद में डूबे हुए थे। चीकू खरगोश का मन नहीं लग रहा था। उसका साथी मीकू खरगोश अभी तक नहीं आया था।

"टुकटुक, चलो मीकू को उसके घर चलकर बुला लाते हैं।" चीकू बोला।

"पता नहीं मीकू कितना लेट लतीफ है। ....चलो।", गुस्से से टुकटुक बोली।

मीकू खरगोश के कमरे में पहुंचकर दोनों चौंक गये। वो एक यंत्र लेकर बैठा हुआ था।

"ये क्या है मीकू?" आश्चर्य से टुकटुक गिलहरी ने पूछा।

"आओ बैठो। देखो, ये लैपटॉप है। आज सुबह ही पापा लाये हैं।" खुशी से चहकता हुआ मीकू बोला।

"लैपटॉप!.....यह क्या होता है?" टुकटुक ने फिर पूछा।

"यह कंप्यूटर का छोटा रूप है। यूं समझो कि यह पोर्टेबल कंप्यूटर होता है।" टुकटुक को समझाता हुआ मीकू खरगोश बोला।

"मीकू तुम्हें पता है, कंप्यूटर का आविष्कार किसने किया था?" चीकू ने पूछा।

"नहीं" मीकू ने अपने लंबे कान हिलाते हुए कहा।

"चार्ल्स बैबेज ने सबसे पहले कंप्यूटर जैसी मशीन की परिकल्पना की थी।"

"अरे, तुम्हें तो बड़ी जानकारी है चीकू" टुकटुक उससे काफी प्रभावित हो उठी थी।

"बहुत तो नहीं लेकिन इतना पता है कि कंप्यूटर के जनक का जन्म 26 दिसम्बर 1791 को इंग्लैण्ड में हुआ था"

"उन्होंने कंप्यूटर बनाया कैसे?" मीकू की जिज्ञासा बढ़ गई थी।

"एक बार चार्ल्स बैबेज को गणना करने का बहुत बड़ा काम करना था। वह गणना करते-करते थक गये। उसी समय उनके मन में यह इच्छा जगी कि इस तरह की लम्बी गणनाओं के लिए कोई मशीन बनाई जाये। ....

"अच्छा, और उन्होंने कंप्यूटर बना लिया।" टुकटुक बात काटते हुए बीच में बोल पड़ी।

"अरे नहीं टुकटुक आविष्कार क्या एक



दिन में होते हैं। उस घटना से तो चार्ल्स बैबेज के दिमाग में कंप्यूटर बनाने का बीज पड़ा।'' चीकू मुस्कुराया।

''फिर, फिर क्या हुआ?'' मीकू पूरी बात जानना चाहता था।

''चार्ल्स बैबेज का मन दिन-रात वैज्ञानिक प्रयोगों में लगा रहता। वह या तो पढ़ते रहते या नये-नये प्रयोगों में जुटे रहते। अपने कंप्यूटर का मॉडल से लेकर उसके कलपुर्जे तक उन्हें खुद ही बनाने पड़े थे।''

''अच्छा.......!'' अविश्वास से टुकटुक बोली। ''हां! लोगों ने उनका मजाक भी खूब उड़ाया परन्तु उनका निर्णय और पक्का होता गया। गणना के लिए उन्होंने एक खास तरह के पंच कार्ड का प्रयोग किया।''

''यह मेरा लैपटॉप उन्हीं का बनाया हुआ है?'' मीकू ने अपने लैपटॉप की तरफ देखते हुए पूछा।''अरे मीकू! चार्ल्स अपने समय से बहुत आगे की सोच रहे थे। उन्हें कंप्यूटर का जनक माना जाता है। उन्होंने पहले डिफरेंस इंजन और फिर एनालिटिकल इंजन का मॉडल बनाया। आज का जो कंप्यूटर है वह इसी एनालिटिकल इंजन जैसा है। उनकी मृत्यु के कुछ समय बाद उनके इन्हीं मॉडलों के आधार पर आधुनिक कंप्यूटर बनें।''

''अच्छा''

''हां, एक बात और, शुरू में बने कंप्यूटर एक बड़े कमरे के बराबर होते थे और बहुत ध ीरे-धीरे काम करते थे। बाद के वैज्ञानिकों ने उस पर और शोध किया जिससे उसकी गति बढ़ती गई और आकार घटता गया। यहां तक कि कंप्यूटर का पोर्टेबल रूप आज हमारे सामने है।'' चीकू खरगोश ने अपनी बात पूरी की।

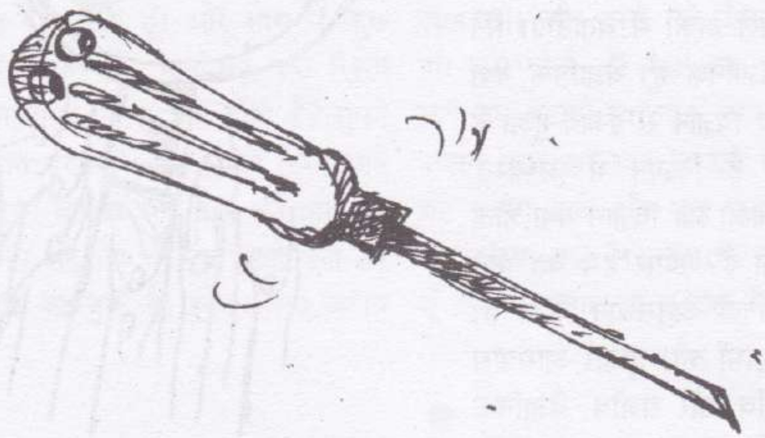
''कंप्यूटर बहुत उपयोगी उपकरण है यह तो मुझे पता था। परन्तु मेरे दोस्त के पास कंप्यूटर से जुड़ी इतनी सारी जानकारी है यह आज पता चला।'' प्रसन्नता से मीकू खरगोश चहका।

तीनों के चेहरे पर दोस्ती की मुस्कान थी।

नीलम राकेश

विज्ञान कोई जटिल चीज नहीं

डॉक्टर पेंचकस घुमाघुमाकर की प्रयोगशाला



बच्चों मैं हूँ डॉक्टर पेंचकस घुमाघुमाकर। मेरा नाम अटपटा लगा? क्या करें मुझे लोग मेरे इसी नाम से ही जानते हैं। मेरा काम ही मेरी पहचान है। पेशे से मैं एक वैज्ञानिक हूँ। तुमने देखा होगा आइन्स्टीन को, हाँ वही उलझे बालों वाले। वे प्रतिभावान व्यक्ति थे और उन्होंने कई वैज्ञानिक खोजें की थी। मेरे बाल भी उलझे हुए हैं पर मैं उनके जितना प्रतिभावान नहीं हूँ। नील्स बोर, श्रोइडिन्गर, डिराक, डार्विन, न्यूटन व इन जैसे अन्य प्रतिभाशील वैज्ञानिकों और उलझे बाल वालों से मेरा करीबी रिश्ता है। मैं आगे तुम्हे इन सब से परिचित करवाउँगा। इससे पहले मैं कहाँ था? हाँ मैं ढीले पेंच, ढीली बातें, अधूरे काम और आलस से नफरत करता हूँ। तुम भी अपने पास कोई भी चीज़ खराब या ढीला देखो तो उसे ठीक कर देना। खैर मैं अभी दिल्ली में वजीरपुर की झुग्गी में रहता हूँ। मेरी प्रयोगशाला यहीं है। तुम सोचोगे कि वैज्ञानिक लोग तो बड़ी बड़ी प्रयोगशालाओं में शोध करते हैं और वह भी बड़े उपकरणों के साथ। तब फिर मैं झुग्गी में क्या कर रहा हूँ? हाँ बच्चो, यह सच है कि वैज्ञानिकों को शोध के लिए टेस्ट ट्यूब, फनल, कैमिकल्स, स्पेक्ट्रोमीटर, थर्मोमीटर, कम्प्यूटर व अन्य -टर नाम के कई उपकरणों की ज़रूरत होती है। मैंने यह सब अपने वैज्ञानिक दोस्तों के जरिये इंतजाम कर लिया है। मैं जिस जगह रहता हूँ वहां स्टील की बड़ी बड़ी फैक्टरियाँ हैं। यहाँ बर्तन बनाए जाते हैं। यह स्टील की मोटी राड तमाम बर्तनों में तब्दील हो जाती है। यह मजेदार प्रक्रिया है। परन्तु जो आबादी यह काम करती है

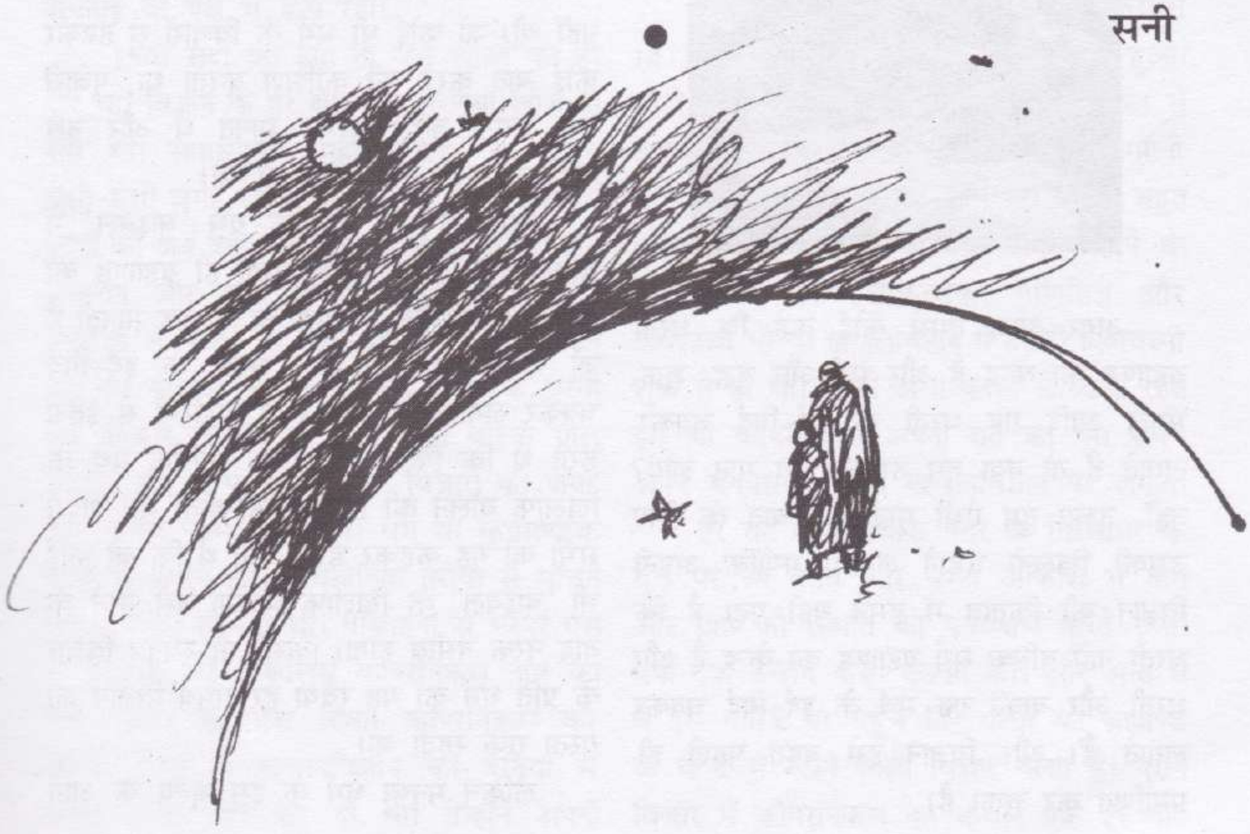
उसकी हालत बेहद खराब है। मैं इस समस्या पर भी खोजबीन कर रहा हूँ। इस पूरे इलाके में फैक्टरियों से तेज़ाब निकलता है जो स्टील को साफ़ करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है पर जिससे लोगों में कई बीमारियां फैलती हैं। बच्चों मैं इस पर ही शोध करता हूँ। मैं इस बीमारी को खत्म करना चाहता हूँ। विज्ञान का मकसद ही होता है समाज को बेहतरी की ओर ले जाए। इस पर तफसील से मैं अगले अंकों में बताउँगा। मैंने यह बात की कि मैं वैज्ञानिक हूँ। वैज्ञानिक क्या होता है? वैज्ञानिक शब्द विज्ञान से इजाद हुआ है जिसका मतलब होता है विज्ञान में अभ्यस्त व्यक्ति। तुम अब ये बताओ कि विज्ञान क्या होता है? वैज्ञानिक क्या करते हैं? ऊपर हम यह बात कर आये हैं कि वैज्ञानिक अनुसंधान करते हैं। किसकी? प्रकृति के नियमों की। तुम्हारे आसपास जो भी वस्तुएं हैं, निर्जीव और सजीव, वैज्ञानिक उनके अन्दर हो रहे बदलावों का अध्ययन करता है। जैसे मेढक फुदकता है, तितली फूलों पर मंडराती है, बादल बरसते हैं, समुद्र उफनता है वैज्ञानिक प्रकृति की खोजबीन करता है। यानी यह जानना की प्रकृति काम कैसे करती है? उनके पीछे काम करने वाले नियम क्या हैं? वे नियम क्या हैं जो पानी को उबलने पर भाप में तब्दील करते हैं और ठंडा करने पर बर्फ में? पत्तों को पीला पड़ने के पीछे क्या कारण हैं? वे कौन से नियम हैं कि दिन और रात होते हैं? हर चीज़ ज़मीन पर क्यों गिरती है? विज्ञान 'क्यों' सवाल से जुड़ा हुआ है। यह क्यों पूछने के बाद क वर्ण के और शब्द क्या कैसे और कहाँ आ आते हैं? पर ये सवाल किससे किया जाता है? शोध करने वाले पहले खूब सोचते हैं और पहले से मौजूद अनुभव और अपनी समझ के आधार



पर जवाब ढूंढते हैं और फिर उसे प्रयोग के जरिये स्थापित करते हैं। प्रयोग से वे जवाब खारिज हो सकते हैं, बदले जा सकते हैं या फिर सही साबित होते हैं। यहीं से प्रकृति के नियमों को जाना जाता है। और भौतिकी, जीवविज्ञान से लेकर रसायनशास्त्र तक के नियम हजारों सालों में खड़े हुए हैं। तुम भी नन्हे वैज्ञानिक बन सकते हो। तुम भी अपना शोध कर सकते हो! तुम पूछोगे की भाई हमारी लैबोरेटरी कहाँ होगी और हमारा टर टर नाम की चीजें क्या होगी? देखो, सबसे पहले तुम्हारी लैबोरेटरी के लिए रसोई काम आ सकती है। तुम्हारे घर के आसपास मौजूद कोई क्यारी या पार्क भी वह काम कर सकता है। तुम भौतिकी के प्रयोग कहीं भी कर सकते हो साइकिल, पेन से लेकर हर चीज़ में।

जीव विज्ञान के प्रयोग पार्क या क्यारी या खुद तुम्हारे अपने शरीर में हो सकते हैं। और रसायन शास्त्र के प्रयोग हो सकते हैं रसोई में। मैं हर बार तुम्हें कुछ प्रयोग करने के लिए बताउँगा और तुम्हारे सोचने के लिए भी समय दूंगा। तुम अपने प्रयोग के निष्कर्ष अपनी खुद की प्रयोगशाला की डायरी में दर्ज कर सकते हो। इस बार मैं बहुत ही सरल प्रयोग देने वाला हूँ। और साथ में कुछ प्रश्न भी। पानी, बर्फ और भाप का क्या रिश्ता होता है? या आसमान नीला क्यों होता है? तुमने रात का आसमान देखा है और उसमे टिमटिमाते तारे भी। एक प्रश्न यह हो सकता है की तारों की उम्र क्या है? और यह कि ये टिमटिमाते क्यों हैं? इनके जवाब ढूंढें जा चुके हैं। इनका क्या जवाब है? सोचो! अगली बार बताउँगा। अब मैं तुम्हे एक बहुत ही आसान सा प्रयोग दूंगा जिसमे तुम्हे ज्यादा कुछ नहीं करना होगा। तुम्हें ये वस्तुएं चाहिए- एक आलू और नींबू, 3 घंटे का समय। समय भी तो एक चीज़ ही होती है। अब आलू को बीच में से काट लो और नींबू को भी काट लो। आलू के एक हिस्से पर नींबू के रस को लगा लो। और दूसरे को जैसा है वैसा ही छोड़ दो। बस दोनों को रख कर छोड़ दो। तीन घंटे बाद तुम देखोगे कि दोनों आलू के हिस्से अलग अलग तरह का रुख दिखाते हैं। अब पहले तुम यह प्रयोग करो और मुझे बताना कि इस प्रयोग का नतीजा क्या निकलता है। तब तक मैं जा रहा हूँ अपनी प्रयोगशाला में जहाँ मैं भी प्रयोग करूँगा।

सनी



विज्ञान

खगोलविज्ञानी कोपरनिकस के जन्मदिन, 19 फरवरी के मौके पर

तर्क और विज्ञान का झण्डा ऊँचा करने वाला महान वैज्ञानिक



अगर आज तुमसे कोई कहे कि धरती ब्रह्माण्ड का केन्द्र है और सूर्य और बुद्ध, शुक्र, मंगल आदि ग्रह धरती के इर्द-गिर्द चक्कर लगाते हैं तो क्या तुम उसकी बात मान लोगे? नहीं, उल्टा तुम ऐसी मूर्खतापूर्ण बात के लिए उसकी खिल्ली उड़ाने लगोगे। क्योंकि अपनी विज्ञान की किताब में हमने यही पढ़ा है कि धरती नहीं बल्कि सूर्य ब्रह्माण्ड का केन्द्र है और धरती और बाकी ग्रह सूर्य के इर्द-गिर्द चक्कर लगाते हैं। और विज्ञान इसे बहुत पहले ही प्रमाणित कर चुका है।

लेकिन क्या तुम जानते हो कि एक समय ऐसा भी था जब लोग धरती को ब्रह्माण्ड का केन्द्र मानते थे? हाँ, यूरोप में 15वीं सदी के अंत तक लोगों का ऐसा ही मानना था। उस समय समाज में धार्मिक विचारों का बोलबाला था। किसी को स्वतंत्र विचार रखने की कोई आजादी नहीं थी। जो कोई भी धर्म के विचारों से हटकर कोई बात करने की कोशिश करता था, पुजारी उसे अपना कट्टर दुश्मन मानते थे और उसे कड़ी से कड़ी सजा दी जाती थी।

ईसाई धर्म के धार्मिक ग्रंथ 'बाइबल' में साफ-साफ लिखा है कि धरती ही ब्रह्माण्ड का केन्द्र है। 'बाइबल' तो सूर्य को भी ग्रह मानती है जो बाकी ग्रहों की तरह धरती के इर्द-गिर्द चक्कर लगाता है। सभी लोग पादरियों से इतना डरते थे कि किसी की उनके धार्मिक ग्रंथ के खिलाफ बोलने की हिम्मत नहीं होती थी। पादरी सभी को यह कहकर डराते रहते थे कि जो कोई भी 'बाइबल' के खिलाफ बोलेगा उसे मरने के बाद नरक नसीब होगा। किसी भी स्वतंत्र विचार के प्रति धर्म का यह रवैया हर समय विज्ञान का रास्ता रोके रहता था।

लेकिन मनुष्य धर्म के इस जुल्म के आगे



कहाँ झुकने वाला था। उसने पादरियों के फरमानों की कोई परवाह न की और निडरता के साथ सच्चाई के पक्ष में डटा रहा।

15वीं सदी का अंत तो जैसे खोजों का ही दौर था। विज्ञान के हर क्षेत्र में नयी-नयी खोजें हो रही थीं। साहसपूर्ण समुद्री यात्राओं के जरिये ऐसी-ऐसी जगहें खोजी जा रही थीं जिनके बारे में लोगों को अब तक कुछ भी पता न था। कोलम्बस, मैगेलान और दूसरे समुद्री नाविकों की महान यात्राओं ने पृथ्वी के मानचित्र की शक्ल बदल दी। इन यात्राओं ने साबित कर दिया कि धरती का आकार चौकोर या चपटा नहीं बल्कि गोल है। हर क्षेत्र में पुराने सड़े-गले विचारों की जगह नये विचार जन्म ले रहे थे। धर्म के कूपमण्डूक रास्ते से अलग हटकर वैज्ञानिक तरीके से सोचने की शुरुआत हो रही थी। परिवर्तनों से भरपूर ऐसे ही दौर ने हमें निकोलस कोपरनिकस नाम का एक महान वैज्ञानिक दिया। कोपरनिकस की महान खोज ने खगोलविज्ञान की दुनिया में उथल-पुथल पैदा कर दी थी। उन्होंने अपनी खोज के जरिये ईसाई धर्म की ब्रह्माण्ड संबंधी धारणा पर करारा प्रहार किया।

निकोलस कोपरनिकस का जन्म 19 फरवरी 1473 को पोलैण्ड देश के तोरून शहर में हुआ। छोटी उम्र में ही पिता की मृत्यु होने की वजह से उनका पालन-पोषण उनके पादरी चाचा की निगरानी में हुआ। कोपरनिकस का ज्ञान का दायरा बहुत व्यापक था। पादरी समिति के सदस्य होने के अलावा वे एक चिकित्सक, गणितिज्ञ और अर्थशास्त्री भी थे। खगोलविज्ञान में उनकी दिलचस्पी शुरू से ही थी। अपने अन्य कामों में व्यस्त रहते हुए भी कोपरनिकस अपना रात का पूरा समय अपने मनपसन्द विषय खगोलविज्ञान पर लगाते।

हर रात वे फ्रोमबोक नगर के गिरजाघर के बुर्ज पर जा बैठते और घण्टों आकाश में तारों और ग्रहों की स्थिति का पर्यवेक्षण करते रहते। वर्षों तक उन्होंने कड़ी मेहनत की। और अन्त में वे इस नतीजे पर पहुँचे कि धरती को ब्रह्माण्ड के केन्द्र में रखने वाला विचार गलत है। पुराने विचार में कोपरनिकस को केवल एक ही बात

सही लगी कि चन्द्रमा सचमुच पृथ्वी के चारों ओर चक्कर काटता है। परन्तु बुध, शुक्र, मंगल तथा दूसरे ग्रह पृथ्वी के नहीं बल्कि सूर्य के चारों ओर घूमते हैं। और खुद पृथ्वी भी सूर्य के चारों ओर घूमती है।

कोपरनिकस ने लगभग चालीस वर्ष की उम्र में ये महान खोजें कीं। परन्तु ईसाई धर्म के अत्याचार के डर से बहुत वर्षों तक उन्होंने अपनी इन महान खोजों को गुप्त रखा। दोस्तों द्वारा मजबूर करने पर अपने जीवन के अन्तिम समय में ही कोपरनिकस ने खोजों की अपनी किताब 'आकाशीय गोलों की परिक्रमा के बारे में' छपने के लिए दी। उनकी यह खोज कोपरनिकस की मृत्यु के समय 1543 में ही छप सकी।

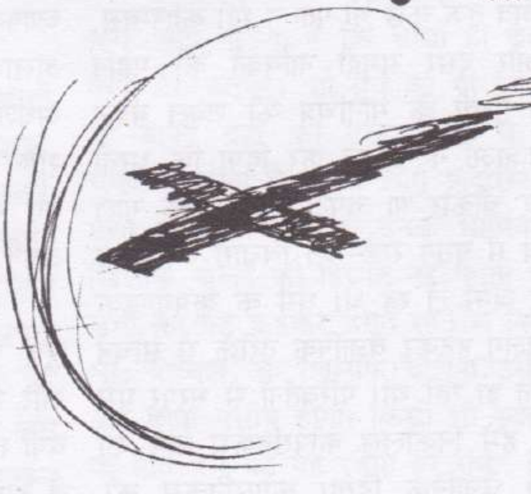
धीरे-धीरे उनकी यह किताब पूरे यूरोप में फैल गयी। नये वैज्ञानिकों के ऊपर कोपरनिकस की खोज का गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने भी ब्रह्माण्ड के बारे में प्रचलित धार्मिक विचार पर सवाल उठाना शुरू कर दिया। और इस खोज के पक्ष में ज्यादा से ज्यादा प्रमाण जुटाने में लग गये।

उनकी इस महान खोज ने विज्ञान के असीम विकास के रास्ते खोल दिये। कोपरनिकस के बाद महान वैज्ञानिकों ब्रूनो और गैलिलियो ने उनकी खोज को पुष्ट किया। आगे चलकर प्रख्यात वैज्ञानिक न्यूटन ने कोपरनिकस के सिद्धान्त को नयी ऊँचाइयों तक पहुँचाया। उन्होंने गति के नियमों की खोज की और गुरुत्वाकर्षण बल का सिद्धान्त दिया। न्यूटन ने कोपरनिकस की खोज में जो रही-सही शंकाएं थीं उन्हें भी मिटा दिया। आज हमारे पास आधुनिक विज्ञान की जो विशाल सम्पदा है उसके सृजन में कोपरनिकस की खोज मील का पत्थर साबित हुई। इसीलिए कोपरनिकस का जन्मदिवस (19 फरवरी) विज्ञान दिवस के तौर पर भी मनाया जाता है।

महान वैज्ञानिक कोपरनिकस ने आँख मूँदकर धर्म के पीछे न चलकर हम सब के सामने एक मिसाल कायम की है। उन्होंने निडरतापूर्वक धर्म के मूर्खतापूर्ण विचारों पर सवाल उठाया और लोगों को सोचने का एक तर्कशील नजरिया प्रदान किया।

● अखिल





भूत बंगला

कैरॉल मूर



भूत बंगला बहुत बड़ा और पुराना था। मुझे जानकारी मिली कि उस भूत बंगले में रात में कुछ अजीब-अजीब चीजें होती हैं। अब सूजी उसमें रहने आ गई है, सिर्फ चार साल की सूजी अपने मां-बाप, भाई और नन्हे पिकाडोर के साथ वहां रहने आई है। पिकाडोर उसका कुत्ता है। चलो पूरा न सही, आधा कुत्ता तो उसे कहा ही जा सकता है। वह चिहुआहुआ नस्ल का कुत्ता है और उतना ही छोटा है जितना इस नस्ल के कुत्ते होते हैं।

सूजी का कमरा परछत्ती पर हैं। इसमें रहना कोई हंसी-खेल नहीं है। ऊंची छत, ठण्डा और अंधेरा कमरा जिसकी दीवारों पर आधी ऊंचाई तक परछाइयां चलती फिरती हों। सूजी कम्बल के नीचे जा घुसी और पिकाडोर भी। तुम तो जानते ही हो कि वह रखवाली करनेवाला कोई कुत्ता तो था नहीं!

सूजी की मां ने उसके लिए एक भालू खरीदा। एक टेडी भालू! उसका नाम टेडी था। वह खूब बड़ा और झबरीला था। सूजी उससे बहुत प्यार करती थी। "ओह! मैं तुम्हें कितना चाहती हूं", वह कहती और उसके गले में इस तरह अपनी बाहें डाल देती जैसे कि घुरघुराने के लिए तैयार किसी बिल्ली को छाती से चिपटा लिया जाता है। पिकाडोर भी उसके घने बालों में खुद को घुसा लेता।

भुतहे बंगले की परछत्ती भले ही डरावनी हो, परन्तु टेडी तो बिल्कुल नहीं था। उसने अपने गले में लाल बिंदियोंवाला नीला स्कार्फ बांध रखा है। उसके पिछले पंजों में काले टेनिस का जूता है, जो फीते और ढेर सारी गांठों की मदद से बंधा हुआ है।

उस टेडी भालू में कुछ चीजें ऐसी हैं जिससे वह अहमक लगता है। उसके चेहरे पर एक कान से दूसरे कान तक फैली हमेशा एक गावदी सी मुस्कान चस्पा रहती है। वह थोड़ा बेढब लेकिन प्यारा था। सूजी की मां ने एक बड़ी दुकान से उसे बहुत सस्ते में खरीदा था।

टेडी की मुस्कुराहट हमेशा बनी रहती।

जब दीवार से खुरचने और चरमराने की आवाज आती,

टेडी मुस्कुराता रहता।

भुतहे घर में आज सूजी की पहली भुतही रात है। उसने अपनी शरारतें अथवा खाने पीने वाले काम पूरा कर लिया है। वह शाम को ही यह सब निपटा चुकी थी। तरह तरह का भेष

बदलकर वह कद्दू बनी थी, नारंगी चमक वाली कद्दू - और अब उसके दोनों डिब्बों के कैण्डी फर्श पर बिखरे थे।

आधी रात हो चुकी है और सभी सो रहे हैं। चारो ओर शान्ति है और कुछ दिखाई नहीं दे रहा कि अचानक दरवाजे पर दस्तक हुई।

ठक...ठक...ठक। पहले धीमी नाजुक आवाज में, फिर तेज और लगातार तेज होती आवाज, जैसे दरवाजे से सटा किसी दानव का हृदय जोर जोर से धड़क रहा हो।

टेडी मुस्कुराये जाता।

कोने के किसी दरार से धुंध की एक पतली धार निकलती चली आ रही है, अचानक वह जमीन पर रेंगते एक सांप में बदल जाती है।

टेडी मुस्कुराता ही रहता है।

फिर खिड़की पर नजर आती है दो सौ साल पुरानी एक जादूगरनी जिसका आधा चहेरा और उस पर पड़ी झुर्रियां काले गोलाकार हैट से ढका है। वह शीशे में से गुजरते हुए इस तरह चली आई जैसे वहां कुछ हो ही नहीं। एक बार अन्दर आकर वह तन कर खड़ी हो गई, पूरे छः फुट ऊंची!

टेडी मुस्कुराता रहा।

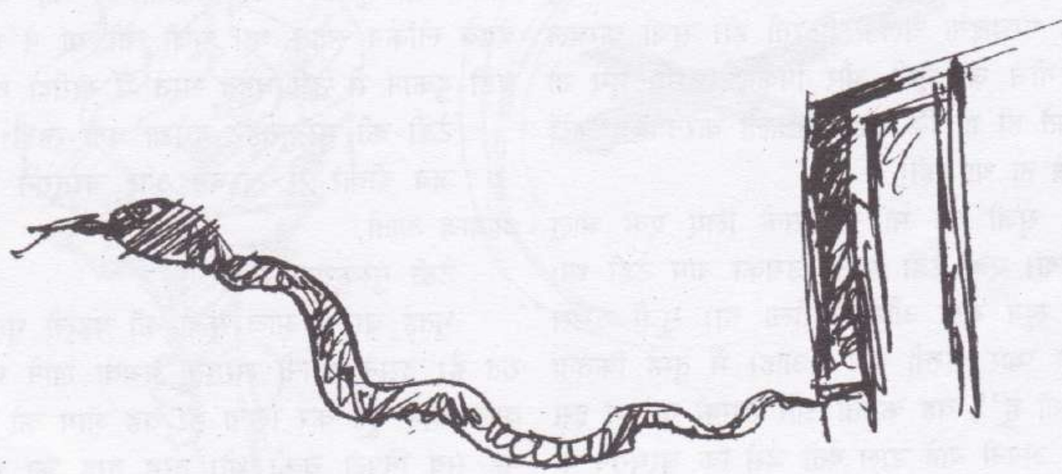
लंबी टांगोंवाला मकड़ा, जिसके बड़े-बड़े और नुकीले दांत थे, छत से नीचे लटक आया था। वह उस बिस्तर से केवल पांच फुट ऊपर था जिस पर सूजी और पिकाडोर चैन की नींद सो रहे थे।

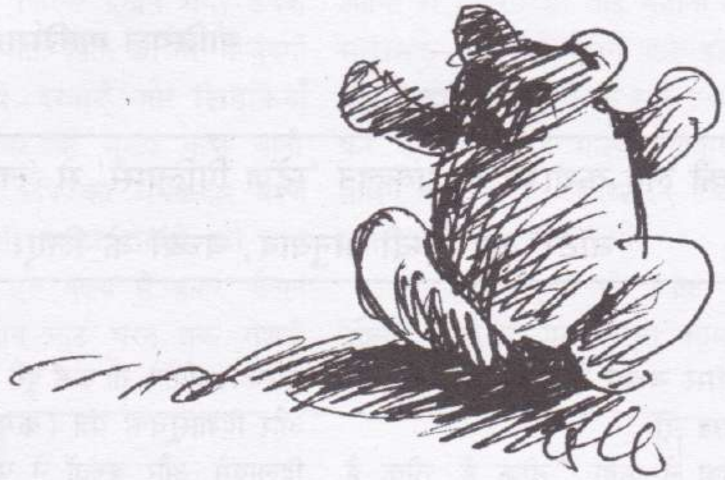
सांप, जादूगरनी और मकड़ा रेंगते, फिसलते और झूलते हुए पास आते जा रहे थे और उनका आकार बढ़ता जा रहा था। ये कुछ भयंकर करनेवाले हैं। ऐसा नहीं हो सकता!

टेडी देख रहा है। अब वह बिल्कुल मुस्कुरा नहीं रहा। उसके होंठ का ऊपरी हिस्सा सिकुड़ गया और निचला हिस्सा इस तरह लटक गया कि उसकी मुस्कान गुर्राहट में बदल गई।

तीनी दैत्य बिस्तर के करीब पहुंचे ही थे कि टेडी उठ खड़ा हुआ। लेकिन इससे भी बड़ी बात यह हुई कि वह विशालकाय होने लगा, उनसे कहीं अधिक तेजी के साथ और आकार में उनसे कहीं अधिक बड़ा। उसका टेनिस का जूता फट पड़ा और स्कार्फ हवा में लहराने लगा। एक प्यारा मुस्कुरानेवाला टेडी भालू भयंकर भालू में बदल गया था। उससे कही ज्यादा भयंकर और चालाक जिसकी तुम कल्पना कर सकते हो।

अपने पिछले पंजों पर खड़ा छत की ऊंचाई





को छूता टेडी डरावना लग रहा था। यह तो अच्छा रहा कि सूजी और पिकाडोर अभी तक सोये हुए थे।

सांप, जादूगरनी और मकड़े का बढ़ना बन्द हो गया। वे उसे एकटक देखे जा रहे थे। उनकी आंखों में आश्चर्य था और वे दहल गये थे। यह उनके लिए बिल्कुल ही अप्रत्याशित था।

और तब टेडी दहाड़ उठा! इतनी तेज कि तुम अपने कानों को बन्द करके भी इसे बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। उन पिशाचों ने उसे सुना। यह भयंकर भालू उनके सबसे बड़े डर से भी बड़ा डर था। हांफते कांपते वे गायब हो गये।

अचानक सूजी जग गई। उसकी आंखें गोल और बड़ी दिख रही थीं। डर के मारे पिकाडोर भी कम्बल से उछल पड़ा और कांपने लगा। लेकिन उन्होंने वहां कुछ भी नहीं देखा। क्योंकि पिशाच तो वहां से दफा हो चुके थे।

और टेडी एकाएक फिर से टेडी भालू बन गया। यह भला कैसे हो सकता था। सब कुछ इतनी तेजी के साथ हुआ था कि कुछ भी देख पाना मुश्किल था, सिवाय इस चीज के कि टेडी के जूते कमरे के दूसरे छोर पर पड़े थे और उसका स्कार्फ बिस्तर के नीचे पड़ा हुआ था।

सांप जा चुका था, जादूगरनी भी जा चुकी थी और मकड़ा भी, दरवाजे पर हृदय धड़कने की तेज आवाज भी खत्म हो चुकी थी। वे अब कभी नहीं लौटेंगे, कभी भी नहीं! कम से कम इस भुतहा बंगले में तो नहीं उस समय तक तो नहीं ही जब तक कि यह भालू रहेगा और वह यहीं रहेगा क्यों कि उसे प्यार किया जाता है।

डरना मत, टेडी यहीं है।

और वह मुस्कुरा रहा है।

अनुवाद : नमिता

पानी-जैसी रोशनी

गैब्रियल गार्सिया मार्खेज़

मार्खेज़ की लघु कथाओं के संकलन 'स्ट्रेंज पिल्ग्रिम्स' से 'लाइट इज़ लाइक वॉटर' का हिन्दी अनुवाद, बच्चों के लिए।

क्रिसमस पर बच्चों ने एक बार फिर नाव की पेशकश रख दी।

उनके पापा ने कहा, "ठीक है, ठीक है, जब हम वापस *कार्ताहेना* लौटेंगे तब नाव खरीद लेंगे।"

लेकिन नौ वर्ष का टोटो और सात वर्ष का जोएल, इस मामले में अपने माता-पिता की उम्मीद से कहीं अधिक दृढ़ थे।

उन्होंने एक आवाज़ में कहा, "नहीं, हमें अभी, इसी वक्त नाव चाहिए।"

"लेकिन, यहां तो नाव चलाने लायक पानी के नाम पर केवल शॉवर से निकलने वाला पानी ही उपलब्ध है," उनकी माँ ने कहा।

वह और उनके पति सही कह रहे थे। *कार्ताहेना दे इंदियास* के उनके घर के अहाते में खाड़ी से सटा एक शेड वाला घाट था जिसमें दो बड़ी नावें आ सकती थीं। दूसरी ओर, यहाँ मैड्रिड में, वे *47 पैसो दे ला कास्तेलाना* स्थित पांचवी मंजिल के अपार्टमेंट में रहते थे। लेकिन आखिरकार, वे नाव लाने से इन्कार नहीं कर सके क्योंकि उन्होंने बच्चों से वायदा किया था कि यदि वे प्राथमिक स्कूल की अपनी कक्षा में पुरस्कार जीतेंगे, तो उन्हें दूरी मापक यंत्र (सेक्सटेंट) और दिशासूचक यंत्र (कम्पास) सहित एक नाव दिलाएंगे, और बच्चों ने पुरस्कार जीत लिए थे। इसलिए उनके पिताजी सबकुछ खरीद लाए और अपनी पत्नी को कुछ नहीं बताया, जो इस तरह की बर्बादी में बिल्कुल यकीन नहीं रखती थीं। वह अल्यूमीनियम से बनी एक खूबसूरत नाव थी जिसके किनारों पर सुनहरी पट्टी बनी थी।

दोपहर के खाने के समय उनके पापा ने घोषणा की, "नाव गैरेज में रखी है, लेकिन समस्या यह है कि उसे लिफ्ट से या सीढ़ी से ऊपर लाने का कोई तरीका नहीं है, और गैरेज में अब जगह नहीं बची है।"

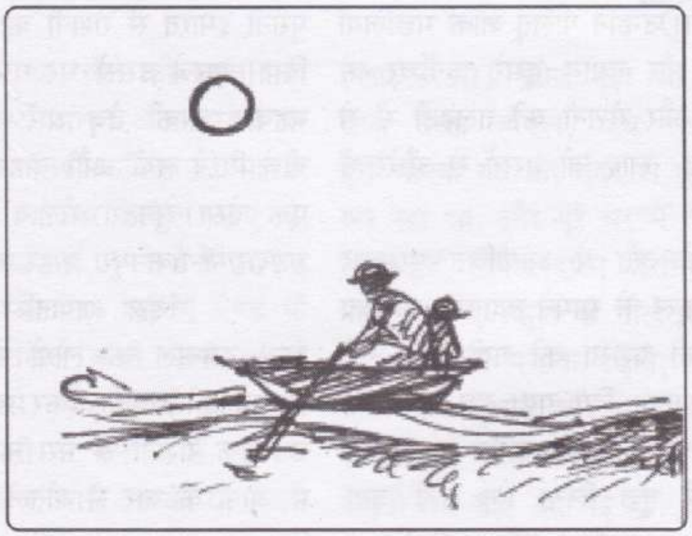
फिर भी, अगले शनिवार की दोपहर, लड़कों ने अपनी कक्षा के दोस्तों को घर आमंत्रित किया और उनकी मदद से वे उस नाव को सीढ़ियों से ऊपर ले आए और किसी तरह घर की नौकरानी के कमरे तक पहुँचा दिया।

"मुबारक हो, नाव तो ऊपर आ गयी, लेकिन आगे की क्या योजना है?", उनके पिताजी ने पूछा।

बच्चों ने जवाब दिया, "कुछ नहीं, हम

केवल इतना चाहते थे कि नाव कमरे में हो, और अब यह कमरे में आ चुकी है।"

हर बुधवार की तरह, इस बुधवार को भी उनके माता-पिता फिल्म देखने गये। उनके जाते ही बच्चों ने, जो माता-पिता की गैर-मौजूदगी में घर के मालिक थे, दरवाज़े और खिड़कियाँ बन्द कर दीं और घर के मुख्य कक्ष यानी लिविंग रूम के एक लैंप का चमकदार बल्ब तोड़ दिया। पानी जैसी ठण्डी रोशनी की एक सुनहरी धार उस टूटे हुए बल्ब से बाहर फैलने लगी, और उन्होंने तीन फुट भरने तक रोशनी बहने दी। उसके बाद उन्होंने बत्ती बुझा दी, नाव निकाली, और जी भरकर घर के तमाम टापुओं के बीच से होते हुए नाव खेते रहे।



यह अद्भुत कारनामा, घरेलू चीजों में छिपी *कविता* पर एक सेमीनार में मेरे द्वारा की गई एक हल्की-फुल्की टिप्पणी का नतीज़ा था। टोटो ने मुझसे पूछा था कि बस एक स्विच दबाते ही रोशनी कैसे जल उठती है। लेकिन मैंने उस पर ज़्यादा सोचने की हिम्मत नहीं की।

और जवाब में मैंने बस इतना कहा, "रोशनी, पानी की तरह होती है, नल चालू करते ही यह बहने लगती है!

और इसीलिए, हर बुधवार को नाव की सैर करते रहे, और उन्होंने दूरीमापक तथा दिशासूचक का इस्तेमाल करना भी सीख लिया। उनके माता-पिता जब फिल्म देखकर लौटते तो देखते कि वे सूखी धरती पर देवदूतों की तरह शान्ति से सो रहे हैं। कई महीनों बाद, उन्हें और साहसिक कारनामें करने की इच्छा होने लगी और उन्होंने गोताखोरी के सारे उपकरणों की मांग कर डाली: जिसमें मास्क, गोताखोर के पैर में बांधने वाले फिन, आक्सीजन टैंक, और कंप्रेस्ड एअर राइफलें शामिल थीं।

यह सुनते ही उनके पिता ने कहा, "तुमने पहले ही एक गलत काम किया है कि नौकरानी के कमरे में लाकर नाव रख दी है जिसे तुम चला भी नहीं सकते, उसपर से अब तुम गोताखोरी के उपकरण भी चाहते हो।"

"और यदि हम पहले सेमेस्टर में 'गोल्ड गार्डेनिया' पुरस्कार जीत गए तो?"

यह सुनकर उनकी मां चिल्ला उठीं, "नहीं, यह तो हद हो गई है।"

उनके पिता ने, अड़ियलपन दिखाने के लिए अपनी पत्नी को एक झिड़की दी।

इस पर बच्चों की मां ने जवाब दिया कि, "इन्हें जो करना चाहिए, उसके लिए तो ये ढेला बराबर भी कुछ नहीं जीत पाते हैं, लेकिन जब इन्हें कुछ चाहिए हो तो कुछ भी जीत सकते

हैं, चाहे वह इनकी टीचर की कुर्सी ही क्यों न हो।"

खैर, अन्त में माता-पिता ने ना तो उनकी इस माँग को स्वीकार किया और ना ही इसे पूरा करने से इन्कार किया। लेकिन जुलाई में, टोटो और जोएल दोनों ने ही 'गोल्ड गार्डेनिया' जीत लिया और हेडमास्टर ने पूरे स्कूल के सामने उनकी तारीफ़ की। उसी दोपहर, बिना मांगे ही, गोताखोरी के कपड़े नयी पैकिंग में उनके बेडरूम में रखे थे। और फिर, अगले ही बुधवार को, जब उनके माता-पिता 'लास्ट टैंगो इन पेरिस' फिल्म देख रहे थे, तब उन्होंने पूरे घर को छह फुट तक रोशनी से भर दिया। उन्होंने पालतू शार्क मछलियों की तरह पलंग और तमाम दूसरे फर्नीचर के नीचे गोते लगाए और रोशनी की तलहटी में से उन चीज़ों को ढूंढ लाए जो बरसों से अँधेरे में खोई हुई थीं।

वर्ष के अंत में आयोजित पुरस्कार समारोह में, पूरे स्कूल के सामने उदाहरण के रूप में दोनों भाइयों की प्रशंसा की गयी और उन्हें उत्कृष्टता के प्रमाणपत्र दिए गए। इस बार उन्हें कुछ नहीं माँगना पड़ा, क्योंकि उनके माता-पिता ने खुद ही उनसे पूछ लिया कि उन्हें क्या चाहिए। उन्होंने एक मुनासिब माँग रखी कि वे केवल अपने सहपाठियों के लिए दावत के रूप में घर पर एक पार्टी करना चाहते हैं।

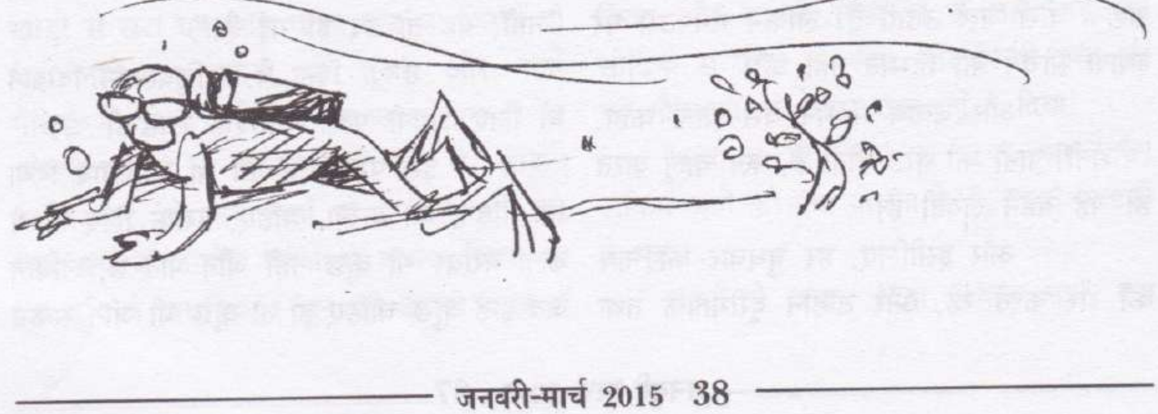
पत्नी के साथ अकेले रहने पर उनके पिता खुशी से चहक उठे।

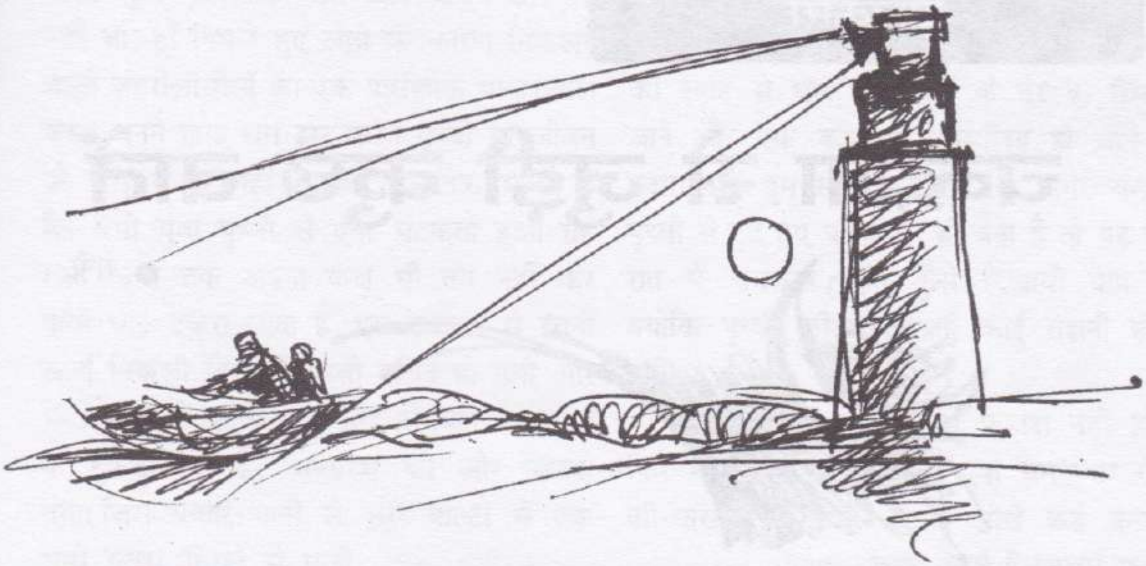
उन्होंने कहा, "यह उनकी परिपक्वता का प्रमाण है।"

"काश! तुम्हारी बात सच हो," उनकी पत्नी ने जवाब दिया।

अगले बुधवार को, जब टोटो और जोएल के माता-पिता '*द बैटल ऑफ़ अलजियर्स*' देख रहे थे, तब पैसियो दे ला कास्तेलाना पर टहल रहे लोगों को पेड़ों के बीच छिपी एक पुरानी इमारत से रोशनी का झरना गिरता दिखायी दिया। बारजे उससे भर गये और उनके ऊपर से बहकर इसकी तेज़ धारें सामने के पोर्टिको से नीचे गिरने लगीं, और बाहर की चौड़ी सड़क पर एक ऐसा सुनहरा सैलाब उमड़ने लगा जिससे *ग्वादारामा* तक पूरा शहर जगमगा उठा।

इस आपातस्थिति की खबर पाकर आये दमकल के लोगों ने पांचवी मंजिल के दरवाज़े को धक्का देकर खोला तो उन्हें पूरा घर छत तक रोशनी से भरा नज़र आया। मुख्य कक्ष में, पापा के बार से बोतलें और विशाल पियानो, जिसका आधा डूबा मनीला शॉल सुनहरी *मंता* रे





मछली की तरह लहरा था, चीते की खाल मढ़ा सोफ़ा और आराम कुर्सी अलग-अलग स्तरों पर तैर रहे थे। अपने भीतर छिपी कविता को साकार करते हुए घरेलु चीजों के पर निकल आए थे, और वे रसोई के आसमान में अपने डैनों पर उड़ रही थीं। बच्चे नाचने के लिए मार्चिंग बैण्ड के जिन वाद्ययंत्रों का इस्तेमाल करते थे वे मां के कांच के मछलीघर से आज़ाद हुईं और उस व्यापक चमकदार रोशनी के दलदल में एकमात्र जीवित और प्रसन्न जीव, यानी चटक रंग वाली मछलियों के साथ-साथ तैर रहे थे। पापा का सामान, मम्मी की क्रीमों और अन्य सामानों वाला जार व सभी के टूथब्रश बाथरूम में तैर रहे थे। मुख्य बेडरूम में लगा टेलीविज़न सेट बगल में तैर रहा था, और उस पर अब भी वह फिल्म चल रही थी जो केवल बड़े लोग ही देखते हैं।

हॉल के दूसरे छोर पर, मास्क पहने और केवल पोर्ट तक पहुंचने लायक ऑक्सीजन के साथ, रोशनी की धार के साथ बहता और पतवार थामे टोटो नाव के पिछले हिस्से में बैठा प्रकाशस्तंभ (लाइटहाउस) खोज रहा था, और साहस के साथ तैरता जोएल, अब भी सेक्सटेंट यानी दूरी-मापक यंत्र की मदद से ध्रुव तारे की तलाश कर रहा था, और पूरे घर में तैर रहा था। उनके स्कूल के सैंतीस दोस्त जैरेनियम के गमलों में पेशाब करने, स्कूल के गीतों के बोल बदल कर हेडमास्टर का मजाक उड़ाने, पापा की बोतल से ब्रांडी की चुस्की लेने में मग्न थे। उन्होंने एक साथ इतनी बत्तियां जला दी थीं कि अपार्टमेंट में रोशनी की बाढ़ आ गई थी, और 'सेंट जूलियन द हॉस्पिटलेर' के प्राथमिक स्कूल की दो समूची कक्षाएं *'47 पैसियोदे ला कास्तेलाना'* की पांचवी मंजिल पर डूब गयी थी। यह हुआ था झुलसा देने वाली गर्मियों और बर्फीली हवाओं वाले, स्पेन के मैड्रिड शहर में, जहां कोई समुद्र या नदी नहीं थी, और जिसकी ज़मीन से घिरी स्थानीय आबादी ने कभी भी रोशनी पर नाव खेने के विज्ञान में महारत हासिल नहीं की थी।

अनुवादः संदीप संवाद

जानकारी

चन्द्रमा से जुड़ी कुछ बातें

• सनी



नन्हें दोस्तो, चन्दा मामा से तो तुम्हारी खूब पहचान होगी! हो सकता है तुम में से कई बच्चों ने चाँद पर बैठी चरखा चलाती बुढ़िया नानी की कहानी भी सुनी हो और कई गीत एवं कविताएँ भी तुम्हें याद होंगी! रात में आकाश की ओर देखते हुए तुम्हारे मन में कई सवाल भी उठते होंगे, जैसे चाँद बना कैसे, यह ऐसा चमकीला क्यों दिखता है, घटता-बढ़ता क्यों है? चलो आज इन्हीं सवालों पर बात करते हैं।

सबसे पहले 1957 में सोवियत रूस ने चन्द्रमा पर अपना पहला अन्तरिक्ष यान भेजा। इसके बाद चाँद के बारे में हम पृथ्वी वासियों ने बहुत सी बातें जानीं। सोवियत रूस के इस प्रयोग के बाद अन्य देशों ने भी अपने यान चाँद पर भेजे और चन्द्रमा से जुड़े तमाम सवालों पर बातें शुरू हुईं। अबतक तो सिर्फ अटकलें लगायी जातीं रहीं थीं, लेकिन यह एक ऐसी शुरुआत थी जब मानव जाति ने पृथ्वी के अलावा एक अज्ञात दुनिया यानी अन्तरिक्ष की पहेलियों को भी सुलझाना शुरू किया।

दोस्तो, सबसे पहले हम जानेंगे कि चाँद का जन्म कैसे हुआ? शुरू में कुछ वैज्ञानिक यह मानते थे कि पृथ्वी की उत्पत्ति के बाद, चन्द्रमा पृथ्वी के अधिक निकट आ गया जिससे पृथ्वी में मौजूद गुरुत्वाकर्षण बल ने उसे अपनी ओर खींच कर रखा। अब चाँद बेचारा क्या करता? छूट के भागने की कोशिश में पृथ्वी की परिक्रमा करने लगा। वहीं दूसरी ओर कुछ वैज्ञानिकों का कहना यह भी था कि चन्द्रमा कभी पृथ्वी का ही हिस्सा हुआ करता था। चूँकि पृथ्वी अपनी धुरी पर बहुत तेजी से घूम रही थी इसलिए इसका एक हिस्सा टूटकर अन्तरिक्ष में चला गया, परन्तु पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण बल से बाहर न आ पाने के कारण पृथ्वी की परिक्रमा करने लगा।

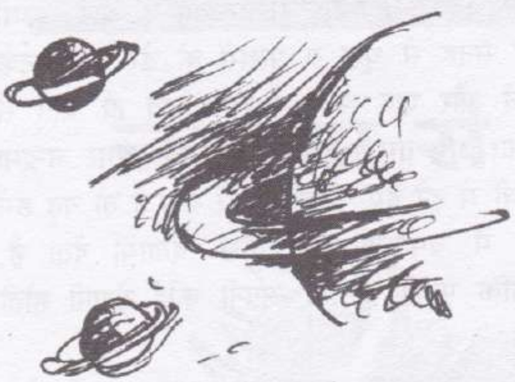
लेकिन आज ज्यादातर वैज्ञानिकों का मानना है कि चन्द्रमा का जन्म पृथ्वी पर एक बाहरी ग्रह के टकराने के कारण हुआ। आज से 4.5 अरब वर्ष पहले पृथ्वी पर निरन्तर उल्का पिण्डों की बारिश व चरम ज्वालामुखीय घटनाओं के कारण पृथ्वी का ज्यादातर हिस्सा पिघला हुआ था। उस

समय युवा पृथ्वी के पास कोई वायुमण्डल भी नहीं था, हाँ पिघले हुए लावे के कारण निकलने वाली जहरीली गैसों का एक प्रारम्भिक वायुमण्डल ज़रूर बनने लगा था। इस समय पृथ्वी पर जीवन के कोई संकेत नहीं मिलते। वैज्ञानिक मानते हैं कि तभी युवा पृथ्वी से एक भटकता हुआ ग्रह (जो अभी तक अपना कक्ष भी तय नहीं कर पाया था) टकरा जाता है, इस टकराव से इतनी ऊर्जा निकली कि पूरी पृथ्वी द्रवित हो गयी और भारी मात्रा में पृथ्वी की सतह से धूल व पत्थरों के टुकड़ों का ढेर अन्तरिक्ष की ओर छिटक गया(जिस प्रकार पानी से भरी बाल्टी में एक भारी पत्थर गिराने से पानी ऊपर की ओर छलकता है)। पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण बल के कारण इस धूल और टुकड़ों के ढेर ने एक कक्ष का निर्माण किया और एक दूसरे में सम्मिलित हो गये। ऐसे चाँद का जन्म हुआ। अगले 50 करोड़ सालों तक ये टुकड़े चाँद की सतह पर टकराते रहे। इन बड़े टुकड़ों के टकराने का पता हमें चाँद की सतह पर मौजूद छोटे-बड़े गड्ढों से चलता है। तब से लेकर आज तक चाँद पृथ्वी की परिक्रमा कर रहा है। वैज्ञानिकों का कहना है कि चाँद पहले पृथ्वी के काफी निकट था लेकिन यह हर साल 3 सेमी. दूर होता जा रहा है। इसी वजह से आज चन्द्रमा हमसे 3,84,400 किमी. दूर जा चुका है। कुछ वैज्ञानिकों का यह भी मानना है कि यह टकराव पृथ्वी पर जीवन के जन्म के कई कारणों में से एक है।



तो हमने यहाँ समझा कि चन्द्रमा का जन्म एक भटकते हुए ग्रह से टकराने के बाद, पृथ्वी की सतह से धूल व पत्थरों के ढेर के छिटक जाने और एक कक्ष में सम्मिलित हो जाने से हुआ। अब तुम सोच रहे होगे कि अगर चन्द्रमा पृथ्वी से टूटे हुए पत्थरों से ही बना है तो यह हमें रात में चमकता हुआ कैसे दिखायी देता है, क्योंकि पृथ्वी की तो अपनी कोई रोशनी होती नहीं ?

चन्द्रमा का अपना कोई प्रकाश नहीं होता फिर भी चन्द्रमा आकाश में एक चमकदार गेन्द की तरह दिखता है। इसके पीछे कई कारक काम करते हैं जिसमें सबसे प्रभावी कारक है सूर्य। चन्द्रमा की सतह पर पड़ने वाली सूर्य की किरणों को चन्द्रमा दर्पण की तरह परावर्तित करता है। यह परावर्तित प्रकाश हमारी आँखों तक पहुँचता है जिससे चन्द्रमा हमें दिखता है। अन्तरिक्ष यात्रियों के चन्द्रमा पर कदम रखने के बाद हमें यह पता चला कि इसकी सतह गड्ढों से भरी हुई है और मिट्टी का रंग सलेटी है। ऐसा लम्बी ज्वालामुखीय घटनाओं के कारण हुआ है। इसलिए चन्द्रमा अपने सतह पर पड़ने वाली सिर्फ़ 12 प्रतिशत सूर्य की किरणों को ही परावर्तित कर पाता है। मतलब चन्द्रमा एक खराब दर्पण है। परन्तु सूर्य की किरणों के अधिक चमकदार होने के कारण हमारी आँखों तक ज़्यादा चमकदार रोशनी पहुँचती है। दूसरा कारक पृथ्वी से चन्द्रमा की दूरी व



चन्द्रमा का आकार है। पृथ्वी से अपनी कम दूरी व बड़े आकार के कारण चन्द्रमा ज़्यादा प्रकाश परावर्तित करने में सक्षम है जिससे यह आकाश में रात के समय सबसे चमकदार व बड़ा दिखायी पड़ता है। तीसरा कारक 'विपरीत प्रभाव' है। मतलब यह कि चन्द्रमा पर कई गहरी छाया क्षेत्रों के साथ एक खुली संरचना भी है। जब सूर्य की किरणें चन्द्रमा की सतह पर सीधी पड़ती हैं तो वह व्यक्ति जो चन्द्रमा को पृथ्वी से देख रहा है वह सूर्य की किरणों के साथ एक रेखा में आ जाता है, जिससे चन्द्रमा की मिट्टी की परछाई छिप जाती है और परावर्तित रोशनी के द्वारा चाँद की चमक और बढ़ जाती है।

ये कुछ कारक हैं जिनसे यह पता चलता है कि अपनी रोशनी न होने के बावजूद क्यों चन्द्रमा रात्रि में अन्तरिक्ष की सबसे चमकदार व आकर्षक वस्तु है, लेकिन अगला प्रश्न अब तुम्हारे मन में यह आ रहा होगा कि है चन्द्रमा अपनी आकृति कैसे बदलता है?

हम यह तो जानते ही हैं कि चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करता है व चन्द्रमा और पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करते हैं। चन्द्रमा की ये अलग-अलग आकृतियाँ सूर्य और पृथ्वी से जुड़ी चन्द्रमा की स्थिति पर निर्भर करती हैं। चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा के दौरान सूर्य के सम्बन्ध में अलग-अलग स्थितियों में पाया जाता है। इसलिए सूर्य का प्रकाश विभिन्न कोणों से चन्द्रमा के विभिन्न भागों को प्रकाशित करता है। हमने अभी ऊपर जाना कि चन्द्रमा सूर्य की किरणों को परावर्तित करता है जिसके कारण वह हमें चमकता हुआ दिखायी देता है। चन्द्रमा का जो हिस्सा सूर्य के सामने होता है वह चमकता है और दूसरा हिस्सा अँधेरे में रहता है। इसको समझने के लिए हम एक गेंद पर अँधेरे कमरे में रोशनी डालें तो हमें गेंद का एक हिस्सा चमकता हुआ दिखेगा और दूसरा हिस्सा नहीं चमकेगा क्योंकि उस पर रोशनी नहीं पड़ पायेगी। हमें चन्द्रमा की कौन सी आकृति दिखेगी यह इस बात पर निर्भर करता है कि इसका कितना हिस्सा सूर्य द्वारा प्रकाशित होगा। और यह हिस्सा हर रोज बदलता रहता है। जैसा कि ऊपर भी बताया गया है कि जैसे-जैसे चन्द्रमा पृथ्वी का चक्कर काटता है वैसे-वैसे हमें चन्द्रमा का प्रकाशित हिस्सा अलग-अलग कोणों से दिखता है। इसे 'चन्द्रमा के चरणों' के नाम से जानते हैं। तो यहाँ हमने समझा कि चन्द्रमा द्वारा पृथ्वी की परिक्रमा के समय सूर्य की किरणों से चन्द्रमा का अलग-अलग हिस्सा प्रकाशित होता है जिसके कारण हमें लगता है जैसे चन्द्रमा आकृति बदल रहा है।

अभी बस इतना ही! अब आकाश की ओर देखकर चन्दा मामा के बारे में जो भी सवाल तुम्हारे मन में उठें हमें लिखकर भेजना। वैसे, चन्द्रमा के किरणों एवं इससे जुड़े कई सवालों और उसके जवाबों को लेकर हम तुमसे फिर मिलेंगे! चाँद के बारे में एक कविता तुम्हारे लिए दे रहे हैं, बताना कैसी लगी-

चाँद का कुर्ता

रामधारी सिंह 'दिनकर'



हठ कर बैठा चांद एक दिन, माता से यह बोला,
सिलवा दो मां, मुझे ऊन का मोटा एक झिंगोला।

सन-सन चलती हवा रात भर, जाड़े से मरता हूं,
ठिठुर-ठिठुर कर किसी तरह यात्रा पूरी करता हूं।

आसमान का सफर और यह मौसम है जाड़े का,
न हो अगर तो ला दो, कुर्ता ही कोई भाड़े का।

बच्चे की सुन बात कहा माता ने, प्यारे सलोने,
कुशल करें भगवान, लगें मत तुझको जादू-टोने।

जाड़े की तो बात ठीक है, पर मैं तो डरती हूं,
एक नाप में कभी नहीं तुझको देखा करती हूं।

कभी एक अंगुल भर चौड़ा, कभी एक फुट मोटा,
बड़ा किसी दिन हो जाता है और किसी दिन छोटा।

घटता बढ़ता रोज, किसी दिन ऐसा भी करता है,
नहीं किसी की आंखों को दिखलाई पड़ता है।

अब तू ही तो बता, नाप तेरा किस रोज लिवायें,
सी दें एक झिंगोला जो हर दिन बदन में आये।



पटाखों की लड़ी

सुकुमार राय



रामचरण अपने जन्मदिन के अवसर पर बूंदी की हंडिया लेकर स्कूल पहुंचा। लंचब्रेक पर हम सभी ने बड़े चाव से मिल-बांटकर बूंदी खायी। नहीं खाया तो केवल दासु ने।

यह सोचना गलत होगा कि पगला दासु को बूंदी पसन्द नहीं थी, बल्कि उसने बूंदी इसलिए नहीं खायी क्योंकि उसे रामचरण बिल्कुल पसन्द नहीं था। दोनों अक्सर आपस में लड़ते-झगड़ते रहते थे। हम सबने रामचरण को कहा था कि वह दासु को भी थोड़ी-सी दे। रामचरण ने दासु को बुलाकर पूछा, ''क्यों रे दासु, खायेगा क्या? अगर मुंह में पानी आ रहा है, तो बोल मेरे साथ फिर से कभी नहीं टकरायेगा, फिर मैं तुझे ऐसी बूंदी खाने दिया करूंगा।'' ऐसा कोई अगर किसी को कहे तो गुस्सा तो आयेगा ही, लेकिन दासु ने हाथ फैलाकर बूंदी ले ली। इसके बाद उसने चपरासी की बकरी को बुलाकर हम सभी के सामने उसे बूंदी खिला दी। फिर बूंदी की हंडिया को देखकर न जाने क्या सोचकर वह मुस्कुराया और वहां से चल दिया। हम सब मिलकर हंडिया में बची-खुची बूंदी खाकर खेल में जुट गये। दासु के बारे में सोचने की फुरसत किसी को भी न रही।

लंचब्रेक के बाद जब हम क्लास में पहुंचे तो देखा दासु चुपचाप एक कोने में बैठकर अंकगणित के प्रश्न हल करने में डूबा हुआ था। तभी मुझे उस पर शक-सा हुआ, मैंने पूछा - ''क्यों दासु तूने कुछ किया तो नहीं?'' दासु ने बड़े ही भोलेपन से जवाब दिया, ''हां! दो एल. सी.एम. के सवाल मैंने हल कर लिये हैं।'' मैंने कहा, ''मेरे कहने का यह मतलब नहीं था। कोई शैतानी ख्याल तेरे दिमाग में घूम तो नहीं रहा?'' मेरी इस बात से वह तिलमिला उठा। उसी समय मासाब(मास्टर साहब) क्लास की ओर आ रहे थे और दासु उनके पास मेरी शिकायत लगाने जा रहा था लेकिन हम सभी ने उसे समझा-बुझाकर बिठा लिया।

मासाब की गिनती बुरे इन्सानों में नहीं की जा सकती। पढ़ाई-लिखाई के मामले में वे कोई खास जल्दबाजी कभी न करते। सिर्फ कभी-कभार जब कक्षा में छात्र ज्यादा उधम मचाते तो वे सख्त नाराज हो उठते थे। उस समय उनका

मिजाज भीषण भयंकर रूप लेता था। मासाब कुर्सी पर बैठते ही बोले, ''नदी का शब्द रूप सुनाओ।'' यह कहते ही उन्हें नींद ने धर दबोचा और वे सो गये। हम सब अपनी-अपनी संस्कृति की किताबें निकालकर अपने-अपने तरीके से ऊंची आवाज से अनाप-शनाप पढ़ने लगे और उसके जवाबस्वरूप मासाब के नाक से निकले सुरीले स्वर से हम सब भांप गये कि नींद काफी गहरी हो चुकी है। फलस्वरूप हम सभी अपने स्लेटें निकालकर आपस में खेलने लग गये। जैसे ही मासाब के खर्राटे की आवाज कुछ धीमे होने लगती तो हम सब सुर मिलाकर 'नदी नदे' का रट लगाते जिससे मासाब की नींद पर लोरी-सा असर होता।

सभी खेल में मस्त थे, केवल दासु एक कोने में बैठा न जाने क्या कर रहा था। किसी का भी ध्यान उसकी ओर न था। थोड़ी देर बाद मासाब की कुर्सी के नीचे रखे फट्टे के नीचे से 'फट' की आवाज आयी। अचानक हुई आवाज ने मासाब को चौंकाकर उठा दिया और वे 'ओ' कहकर डांटने ही वाले थे कि एकाएक 'फूट फाट दुम दड़ाम धूप धाप' की भीषण आवाज से लगा मानो स्कूल की सारी इमारत कांप उठी हो। ऐसा लगने लगा जैसे इलाके के सारे मिस्त्री और मज़दूर मिलकर छत पीट रहे हों। दुनिया भर के लठैत मिलकर लाठी पीट रहे हों। थोड़ी देर तक तो हम सब, जिसे पाठ्यपुस्तक में किंकर्तव्यविमूढ़ कहते हैं, बने खड़े रहे। मासाब के मुंह से एक बड़ी विचित्र सी आवाज आयी और वे हाथ और पांव के सहारे हवा में लहराते हुए एक विशाल कूद के साथ टेबल पार करते हुए, एकदम क्लास के बीचोबीच आकर धड़ाम से गिरे। हमारे इलाके के कालेज का छात्र नवीन पाल हमेशा से हाई जम्प में पहला इनाम लेता आया है लेकिन उसे भी हमने ऐसा कारनामा करते नहीं देखा। हमारी पडोसी क्लास के निचली कक्षा के छात्र



ऊंचे स्वर में पहाड़ा याद कर रहे थे। वे भी भयभीत होकर चुप हो गये। देखते ही देखते सारे स्कूल में हंगामा-सा खड़ा हो गया। यहां तक कि चपरासी का कुत्ता भी घबराहट में भौंकने लगा और इधर-उधर दौड़कर गड़बड़ी फैलाने लगा।

लगभग पांच मिनट के भीषण शोर-शराबे के बाद जब सब कुछ ठंडा-सा होने लगा तब मासाब का स्वर सुनाई पड़ा, 'ये कैसी आवाज थी, देखो।' चपरासी भैया ने एक लम्बे से बांस के द्वारा बड़ी सावधानी और धीरे से तख्ते के नीचे रखी हंडिया को धकेल बाहर निकाला। रामचरण वाली हंडिया जिसके ऊपरी भाग में कुछ बूंदी के दाने अब तक चिपके हुए थे। मासाब भड़क उठे, ''ये हंडिया किसकी है?'' रामचरण ने जवाब दिया, ''जी मेरी।'' बस यह कहना भर था कि उसके दोनों कानों की जमकर मालिश हुई, ''हंडिया के अन्दर क्या रखा था तूने।'' अब रामचरण की समझ में बात आयी कि इस पूरे बवंडर की सारी जिम्मेदारी उसी के सिर पर आ गिरी है। उसने समझाने की कोशिश की, ''जी मैं उसमें बूंदी भरकर लाया था, उसके बा...'' मासाब बीच ही में टोककर बोले, ''उसके बाद बूंदी छूमंतर होकर पटाखों की लड़ी बनकर फूटने लगी।'' यह कहकर उन्होंने उस पर दो जबर्दस्त थप्पड़ कसे।

दूसरी क्लासों से सभी टीचर तब तक वहां जमा हो चुके थे। वे सभी संगठित होकर आगे बढ़ने लगे। हम सबने अनुमान लगाया कि मामला नाजुक है और रामचरण की सामूहिक रूप से धुनाई होने वाली है जबकि बेचारे का कोई दोष नहीं है। इतने में दासु मेरी स्लेट लेकिर मासाब के पास पहुंच गया और उसमें खींची लकीरें और सही गलत के निशान मासाब को दिखाते हुए बोला, ''यह देखिये जब आप सो रहे थे तो ये सभी खेल रहे थे। स्लेट पर मेरा नाम लिखा था।'' मासाब का भयंकर थप्पड़ मेरे ऊपर आने ही वाला था कि अचानक कुछ सोचकर वे रुक गये। फिर दासु की ओर घूरकर देखते हुए बोले, ''चुप रहो, कौन कहता है कि मैं सो रहा था।'' दासु कुछ देर तक उन्हें देखते हुए बोला, ''तो फिर आपके नाक से खर्राटे की आवाज क्यों आ रही थी?'' मासाब तुरंत ही बात को दूसरी ओर मोड़ते हुए बोले, ''अच्छा तो वे सभी खेल रहे थे और तुम क्या कर रहे थे?'' दासु बेझिझक बोला, ''मैं पटाखों में आग लगा रहा था।'' यह सुनकर सभी स्तब्ध रह गये कि यह लड़का क्या कह रहा है।

लगभग आधे मिनट तक सभी खामोश रहे अचानक मासाब टूट पड़े, ''पटाखों में आग क्यों लगा रहे थे?'' दासु कब डरने वाला था। उसने रामचरण की ओर इशारा करते हुए कहा, ''उसने मुझे बूंदी देने से क्यों इन्कार किया?'' ऐसी अजीब दलील सुनकर रामचरण बोल पड़ा, ''मेरी बूंदी, मैं जिसे मर्जी दूंगा।'' दासु ने तुरन्त जवाब दिया - ''तो फिर मेरे पटाखे, मैं जो जी में आये करूंगा।'' ऐसे पागल के साथ बहस में उलझना बेकार है। इसी वजह से सभी शिक्षक उसे थोड़ा बहुत डरा-धमका कर अपनी-अपनी कक्षाओं की ओर चले गये। चूंकि सभी जानते थे कि वह थोड़ा पागल है, उसे कोई सजा नहीं मिली। बहुत कोशिशों के बावजूद हम उससे उसकी गलती नहीं मनवा सके। वह अड़ा रहा - ''मेरे पटाखे, उसकी हंडिया। अगर गलती मेरी है तो उसकी भी है, इसलिए उसकी पिटाई अनुचित नहीं थी?''

विज्ञान

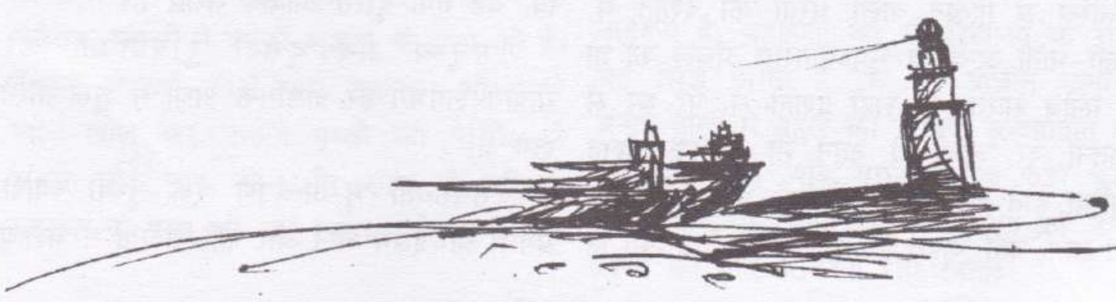
कॉस्मास

प्रसिद्ध खगोलविज्ञानी और लेखक कार्ल सागान की विश्व प्रसिद्ध रचना के अंश

(तीसरी किश्त)

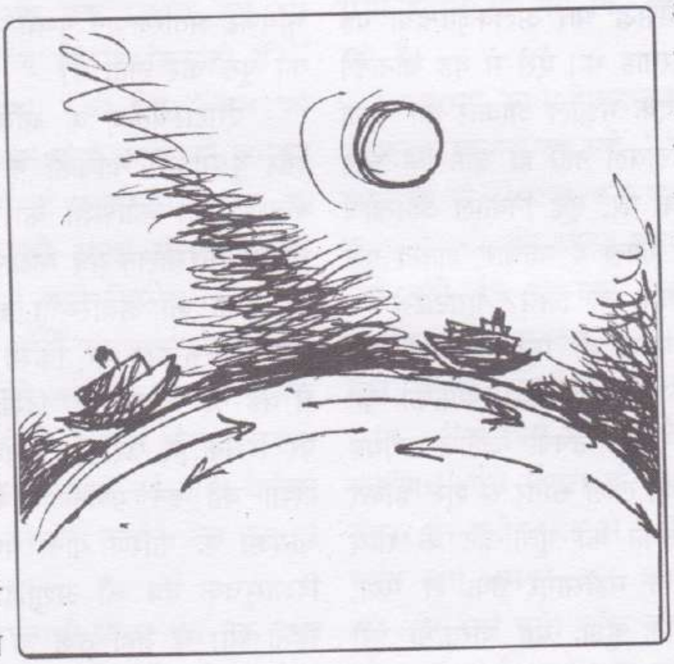
उस समय भूमध्यसागरीय अंचल समुद्री यात्राओं के लिये प्रसिद्ध था। अलेक्ज़ान्द्रिया ग्रह का सबसे बड़ा बन्दरगाह था। ऐसे में यह जानलेने के बाद कि पृथ्वी एक मंझोले आकार का गोला मात्र है, क्या तुम उतावले नहीं हो जाते कि चल पड़ें एक खोजी यात्रा पर, ढूंढ निकालें अनखोजे जगहों को, या फिर खोल दें पतवार, शायद पूरी धरती की ही परिक्रमा के लिये? एराटोस्थेनीज़ के चार सौ साल पहले ही फ़राओ नेख़ों द्वारा भेजा गया एक फिनिशियाई बेड़ा अफ्रीका का परिक्रमा कर चुका था। उनके जहाज शायद नाजुक खुले जहाज थे, लाल सागर से शुरू होकर यह सफ़र उन्हें अफ्रीका की पूर्वी तट के साथ मोड़ते हुए अटलांटिक महासागर तक ले गया, फिर भूमध्यसागर होता हुआ यह परिक्रमा पूरी हुई। उनका यह अभियान तीन साल में पूरा हुआ, और आज इतने ही समय में एक आधुनिक भ़ॉयेजर अंतरिक्षयान पृथ्वी से शनि तक की यात्रा को पूरा कर लेता है।

ऐराटोस्थेनीज़ के अविष्कार के बाद बहादुर और दु:साहसी नाविकों ने अनेकों महान समुद्री यात्राओं की कोशिशों की। उनकी जहाजें छोटी थीं, नौ परिचालन यंत्र साधारण स्तर के थे। किसी नई जगह की अवस्थिति को निश्चित करने का एक मात्र तरीका था, किसी जानी पहचानी जगह से वह नई जगह किस दिशा में और कितनी दूरी पर स्थित है, उसकी जानकारी हासिल करना। दिशा की इन गणनाओं में हवा और समुद्री धाराओं के कारण यात्रा पथ से भटकाव होते, दिशासूचक यंत्र की अशुद्धियाँ भी इसमें शामिल रहती थीं। वे जहाँ तक हो सके तटों के करीब रहने की कोशिश करते थे। जब वे अनजान



सागरों में होते तो रात के बाद क्षितिज के सापेक्ष नक्षत्रों की ऊंचाई देखकर अक्षांश तो जान लेते थे, पर देशांतर जानने का कोई उपाय उन्हें ज्ञात नहीं था। नये सागरों में ये परिचित नक्षत्र उन्हें निश्चित रूप से आश्वस्त करते थे। तारे हमेशा अन्वेषकों के दोस्त रहे हैं, चाहे यात्रा उस समय की समुद्रगामी जहाजों की हो या महाकाश में आज की अंतरिक्ष यानों की हो। एराटोस्थेनीज़ के पहले कइयों ने कोशिशें की होंगी, पर धरती की परिक्रमा की कामयाबी मैगेलन के समय के पहले किसी को नहीं मिली।

जांबाजी और दु:साहस से भरपूर यात्राओं की कैसी दास्तानें उन दिनों याद की जाती होंगी जब जहाजी और नाविक, संसार के वे हुनरमंद लोग, अलेक्ज़ान्द्रिया के एक वैज्ञानिक की गणित पर अपनी जान दांव पर लगा देते थे।



एराटोस्थेनीज़ के समय जो ग्लोब बनाये जाते थे वे अंतरिक्ष से दिखने वाली धरती को दर्शाते थे, भली-भांती अन्वेषित भूमध्सागरीय अंचल को तो ये ग्लोब सारत: ही सही दर्शाते थे, पर घर से जितनी दूर जाओ ये उतने ही अधिक गलत साबित होते थे। ब्रह्मांड के बारे में हमारा आज का ज्ञान, नहीं चाहते हुये भी अनिवार्यत: ऐसा ही है। पहली सदी में, अलेक्ज़ान्द्रियाई भूगोलविद स्ट्राबो ने लिखा था :

वे लोग जिन्होंने पृथ्वी परिक्रमा की अपनी कोशिशों को बीच में ही छोड़ कर लौट आये थे, यह कभी नहीं कहते कि किसी विशाल भू-खंड ने उनका रास्ता रोक लिया, क्योंकि समुद्रपथ उनके लिये पूर्णरूप से उन्मुक्त बना रहा, असल कारण था उनमें दृढ़ता का अभाव और खाद्यसामग्रियों की कमी .... एराटोस्थेनीज़ कहते हैं कि यदि अटलांटिक महासागर का विशाल विस्तार आड़े न आता तो हम समुद्र के रास्ते अनायास आईबेरिया (स्पेन) से भारत पहुंच जाते .. .. ऐसा काफी हद तक मुमकीन है कि शीतोष्ण अंचल में एकाध आबाद भू-भाग भी हो ..... और वास्तव में यदि धरती का यह दूसरा हिस्सा आबाद हो तो वहां की आबादी हमारे यहां के लोगों की तरह नहीं होती, और हम इस बात के कायल हो जाते कि यह एक दूसरा आबाद संसार है।

मनुष्य अब दूसरी दुनियाओं की यात्रायें-लगभग हर प्रासंगिक अर्थों में शुरू करने लगे थे।

उत्तरावर्ती भू-अन्वेषण एक पृथ्वी व्यापी प्रयास था। इसमें चीन और पॉलिनेशिया से चलाये

गये अभियान और साथ ही वहां के लिये चलाये गये अभियान दोनों ही शामिल थे। हालांकि चीजें तब परिपूर्णता में पहुंचती है जब क्रिस्टोफर कोलंबस अमेरिका की खोज करते हैं, और फिर बाद की सदियों की यात्राओं के साथ पृथ्वी का भौगोलिक अन्वेषण संपूर्ण हो जाता है। कोलंबस का पहला अभियान सबसे प्रत्यक्ष रूप से एराटोस्थेनीज़ की गणनाओं से जुड़ा हुआ है। कोलंबस जिसे वे इंडीज़ पहुंचने का उपक्रम कहते हैं, उससे मोहग्रस्त थे। जापान, चीन और भारत पहुंचने की एक ऐसी योजना, जिसके तहत अफ्रीका के तटों को छूते हुए पूरब की ओर नहीं जाना था, बल्कि अनजान पश्चिमी समुद्र में हिम्मत के साथ कूद पड़ना था, या जैसा कि एराटोस्थेनीज़ ने चौंकाने वाली प्रागविज्ञान के आधार पर कहा था 'समुद्र से होकर आइबेरिया से भारत तक की यात्रा'।

कोलंबस घूम-घूम कर पुराने मानचित्र बेचा करते थे और सतर्कता और पूरी तत्परता के साथ प्राचीन भूगोलविदों द्वारा लिखी और उनके बारे में लिखी गई किताबें पढ़ते थे जिसमें एराटोस्थेनीज़, स्ट्राबो, टॉलेमी शामिल थे। लेकिन इंडीज़ पहुंचने का उपक्रम सफल हो पाये, और जहाज़ और नाविक दीर्घ समुद्रीयात्रा को झेल सकें, इसके लिए धरती को, उस आकार से जैसा कि एराटोस्थेनीज़ ने बताया था छोटी होनी चाहिए थी। अतः कोलंबस ने अपनी गणनाओं में जालसाजी की जिसकी पुष्टि सालामांका विश्वविद्यालय के परीक्षक मंडली ने काफी शुद्धता के साथ की है। जितनी पुस्तकें उनके पास उपलब्ध थीं उनसे खोज-खोज कर उन्होंने पृथ्वी की परिधि के सबसे छोटे मान का, और साथ ही एशिया महादेश के पूरब की ओर विस्तार के सबसे बड़ा



मान का इस्तेमाल किया, और उसके बाद इन मानों को भी बढ़ा चढ़ा कर पेश किया। यदि रास्ते में अमेरिका नहीं मिलता तो कोलंबस का अभियान बुरी तरह से असफल हो जाता।

पूरी धरती को अब भली-भांति रूप से खोज लिया गया है। किसी नये महादेश या किसी खोये हुए देश के मिलने की अब कोई संभावना नहीं रह गयी है पर जिस तकनोलॉजी ने हमें धरती के सबसे दूर के अंचलों को खोजने का और वहां बसने की इजाज़त दी है, उसी ने ऐसे समय में हमें हमारे ग्रह को छोड़कर, अंतरिक्ष में डग भरने की, और नई दुनियाएं खोजने की इजाज़त भी दी है। पृथ्वी से बाहर निकलकर अब हम इसे ऊपर से देख सकते हैं, इसकी ठोस गोलाकार आकृति, जो एराटोस्थेनीज़ के नाप के अनुरूप है, महादेशों की सीमारेखाओं के साथ, यह सिद्ध करता है कि उन प्राचीन मानचित्र बनाने वालों में बहुतों की योग्यता सन्देहातीत थी। इस दृश्य को यदि एराटोस्थेनीज़ और दूसरे अलेक्ज़ान्द्रियाई भूगोलविद देख पाते तो उनके खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहता।

फिल्म समीक्षा

भागो भूत

दुनियाभर की भाषाओं में, और हिंदी में भी ऐसी बहुत सी फिल्में बनी हैं, जो बच्चों को ज़रूर देखनी चाहिए। लेकिन टीवी, इंटरनेट में ज्यादातर उलजूलूल किस्म की फिल्में दिखायी जाती हैं, जो शायद तुम्हें पसंद भी आ जाती हों, क्योंकि बढ़िया फिल्मों की जानकारी भी कहां हो पाती है। हम उन्हीं फिल्मों से अपना मनोरंजन कर लेते हैं जिसमें आमीर खान और सलमान खान थोड़ा नाचते गाते और थोड़ी मसखरी करते हों। लेकिन ऐसा नहीं है कि अच्छी फिल्में बनी ही नहीं या बनती नहीं हैं! तुमको यह जानकर अच्छा लगेगा कि तुम्हें ध्यान में रखकर हिन्दी सिनेमा में भी एक से बढ़कर एक शानदार फ़िल्में बनी हैं। लेकिन बहुत दुख की बात है कि अब ऐसी फ़िल्में बहुत नहीं बनती, और बीते समय में जो थोड़ी-बहुत फिल्में बनी भी हैं टी.वी. चैनल वाले उन्हें प्रसारित नहीं करते। इसलिए हम प्रयास करेंगे कि कोंपल के हर अंक में तुम्हें किसी ऐसी फिल्म से परिचित कराएं, जहां तुम कल्पना के झूले पर पींगे बढ़ा सको। और ऊंचाई और गहराई का एक साथ आनन्द ले सको।

इस बार हम तुम्हें 'भागो भूत' नाम की फिल्म के बारे में बताएंगे!

यह एक ऐसी शानदार फ़िल्म है जिसे न केवल बच्चों ने, बल्कि बड़ों ने भी बहुत पसंद किया। तुम्हें भी यह फिल्म बहुत पसंद आयेगी। 'भागो भूत' 2002 में बनी थी। इसका निर्देशन किया था सई परांजपे ने। इन्होंने बच्चों के लिए जादू का शंक (1974) और सिकंदर (1976) जैसी फिल्में भी बनायीं।

खैर, लौटते हैं अपनी फिल्म की ओर। 'भागो भूत' फ़िल्म का मुख्य पात्र तुम्हारे जैसा बच्चा 'नानू' है जो बहुत तेज़ दिमाग और नटखट है। तेज़ दिमाग होने के बावजूद नानू पढ़ाई में ध्यान नहीं देता है और इस वजह से वह पढ़ाई में उतना बढ़िया नतीजे नहीं ला पाता जितना कि उसके अध्यापक और अभिभावक उससे उम्मीद करते हैं। नानू के अध्यापक उसका मजाक उड़ाते हैं और बात बात पर बन्दर घुड़की देते हैं। नानू के बाल मन में यह बात बैठ जाती है कि वह पढ़ाई में कभी भी होशियार नहीं हो सकता।

धीरे-धीरे कहानी आगे बढ़ती है और यह पता चलता है कि उस गाँव के जंगल में एक भूत ने डेरा जमा रखा है। गाँव वाले घबरा जाते हैं और अपने बच्चों को जंगलों की तरफ़ नहीं जाने की सख्त हिदायत देते हैं। स्कूल में मास्टर जी का भी यही निर्देश होता हैं। लेकिन, बच्चे भला कहां अपनी उत्सुकता रोक पाते हैं।

एक दिन जब कक्षाएँ चल रही होती हैं, तो

बच्चे तय करते हैं कि आज भूत देखा जाए और पूरी कक्षा जंगल में पहुँच जाती है। लेकिन आध रस्ते तक पहुँचते-पहुँचते ज्यादातर बच्चे डर के मारे वापस लौटने लगते हैं। अकेला नानू ही आगे बढ़ता जाता है और जंगल के अंदर पहुँच जाता है। भूत से भेंट करने की इच्छा लिए वह उसे ढूंढ़ता है और अचानक एक पेड़ से टकराकर गिर पड़ता है। तभी वहां कोई आता है और उसका मोच खाया पैर ठीक कर देता है!

क्या सोच रहे हो?

भूत...?

और भूत होकर भी बच्चे को कोई नुकसान नहीं पहुँचाता?

हा हा हा!

यह बहुत कुछ अजीबोगरीब है, लेकिन होता ऐसा ही है। और इस भूत का नाम है : 'भागो'। फ़िल्म का नाम 'भागो भूत' पढ़कर, कहीं यह न समझ लेना कि भूत आया, चलो भागो। यह फ़िल्म भागो नाम के भूत के साथ नानू की दोस्ती के बारे में है।

धीरे-धीरे नानू और भूत की दोस्ती हो जाती है, लेकिन इस दोस्ती के बारे में गाँव में दूसरा कोई नहीं जानता। नानू भूत को अपनी पुस्तकें दिखाता है और उसे उनके बारे में बताता है। और जानते हो! भूत क्या करता है? भूत नानू को जंगल घुमाता है। उसे तरह-तरह के जीव-जन्तुओं, पेड़-पौधों के बारे में बताता है और जंगल में रहने के नियम समझाता है। हां, बच्चों, जंगल में रहने के भी नियम कानून होते हैं।

धीरे-धीरे उनकी दोस्ती गहरी होती जाती है। यह नानू की दोस्ती का ही असर था कि भूत गांव में लोगों की मदद करता है। एक दिन किसी आदमी को सांप डस लेता है। भागो उस व्यक्ति



की जान बचाकर गायब हो जाता है क्योंकि वह नहीं चाहता कि उसके बारे में लोगों को पता चले। इधर, गाँववाले समझते हैं कि नानू ने उसकी जिन्दगी बचायी है।

नानू की जानवरों से भी खूब पटती है। धोबी के गधे से भी नानू की दोस्ती हो जाती है। एक दिन गधा जख्मी हालत में आता है, तब भूत नानू को पत्तियों का लेप तैयार करके देता है। गधे के घावों पर वह दवा लगा दी जाती है और गधा भला चंगा हो जाता है।

बस, फिर क्या था! नानू का खोया हुआ सम्मान उसे वापस मिल जाता है। स्कूल के मास्टर और उसके सहपाठी अब उसका मजाक उड़ाना बंद कर देते हैं। जो लोग रोज़ नानू के पिताजी के पास उसकी शिकायतें लेकर पहुँचते थे, अब वे सब भी नानू से बेहद खुश हैं।

परन्तु, नानू को यह सब बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता। वह जानता है कि यह सब 'अच्छे काम' उसने नहीं किए हैं। इन कामों को अंजाम देने वाले तो 'भूत भइया' हैं। इसलिए, सारी तारीफ़ों और ईनाम के असली हकदार तो

वही हैं, नानू नहीं।

नानू अपनी झूठी तारीफ से बहुत दुखी होता है और भूत को इस बारे में बताता है। लेकिन भागो, यानी वह भूत, नानू से वचन लेता है कि किसी भी हालत में वह लोगों को उसके बारे में नहीं बताएगा।

एक दिन गाँव की एक लड़की तेज़ बहाव वाली नदी में डूबने लगती है। नानू फिर से भूत की मदद लेता है और लड़की को बचा लिया जाता है। लोग एक बार फिर नानू की वाह-वाही करने लगते हैं और इस बार उसके सम्मान में गाँव के सरपंच को बुला लिया जाता है। तय होता है कि गाँव का सरपंच खुद आकर नानू को ईनाम देगा। इस मौके के लिए एक भव्य पण्डाल सजाया जाता है और तय समय पर पूरा गाँव वहां आ पहुँचता है, लेकिन नानू को यह बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता, वह ऐसे कामों का झूठा श्रेय नहीं ले पाता जिसे उसने किया ही नहीं और उसके धैर्य का बांध टूट जाता है।

वह गाँव वालों को पूरी कहानी बता देता है। वह भागो भूत और उसकी दोस्ती के बारे में गाँव वालों से सारी बातें कह देता है। वह सबके सामने कहता है कि जिन कामों के लिए उसे यहां ईनाम दिया जाने वाला है, दरअसल वे सारे काम तो उसने किए ही नहीं थे। उन्हें तो जंगल वाले भूत ने किया था!

सरपंच सहित तमाम गाँववालों को इस बात पर विश्वास नहीं होता कि ये कारनामे जंगल वाले किसी भूत के हैं। वे सब तो यही सोचते हैं कि भूत-प्रेत तो लोगों को तंग करते हैं वे उनकी ज़िन्दगी नहीं बचाया करते। फिरभी वह लोग नानू के साथ भूत को ढूंढ़ने जंगल में जाते हैं, लेकिन उन्हें वहां न तो कोई भूत मिलता है और न ही



कोई भयानक आवाज़ सुनायी पड़ती है।

नानू को यकीन था कि भूत से उसकी मुलाकात हो जाएगी, लेकिन अफ़सोस! भूत भइया जा चुके थे। भूत को बुलाने के लिए नानू वह 'खास' आवाज़ भी निकालता है जो भूत ने उसे संकेत के रूप में सिखाया था , लेकिन उसका भी कोई नतीजा नहीं निकलता। तभी, नानू उस पेड़ के पास पहुँचा जिसके कोटर में भागो भूत अपना कुछ 'सामान' रखा करता था। उस कोटर में जब नानू ने हाथ डालकर टटोला, तो अखबार की एक कतरन मिली जिसे पढ़कर नानू के दिमाग में कई विचार आने लगे और उसके भोले-भाले, बाल मन को गहरी चोट पहुंची। उसके मुह से बस इतना ही निकल सका "भूत भइया वापस आ जाओ, सब लोग बुरे नही होते, मैं तो ऐसा नहीं हूं!"

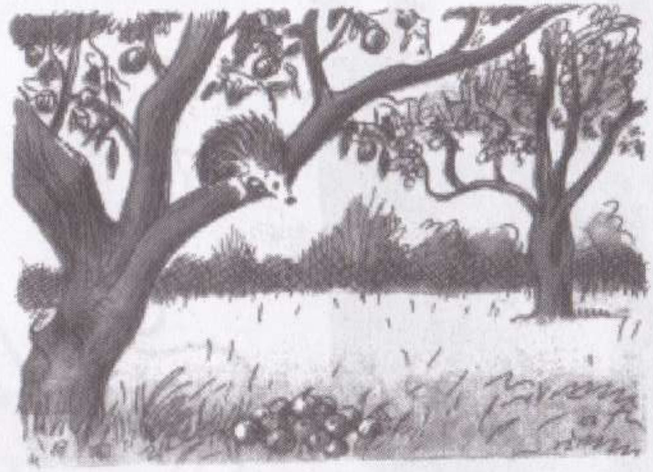
फिल्म की कहानी तो यहां खत्म हो जाती है, लेकिन फिल्म बेहद सहज सरल तरीके से बच्चों की दुनिया के बारे में बड़े लोगों को भी कुछ बता जाती है, जिन्हें बहुत से "बड़े" भी नहीं समझ पाते। यह फिल्म केवल बच्चों के लिए नहीं है, इसे तुम अपने मम्मी-पापा को भी दिखाना।

● **प्रशान्त श्रीवास्तव**

जंगली चूहा जाड़े के लिए भोजन-संग्रह करता है



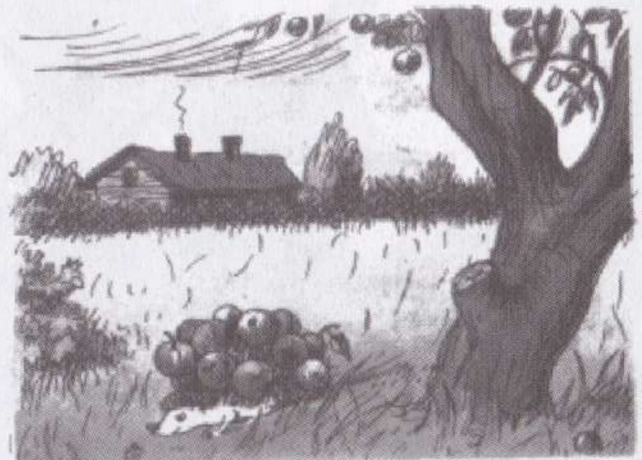
जंगल के चूहे ने आहें भरीं-काम है मुश्किल मेरी!



कैसे छो ले जाऊं इनको, बड़ा चाहिये कस-बल मुश्किल बड़ी घनेरी!

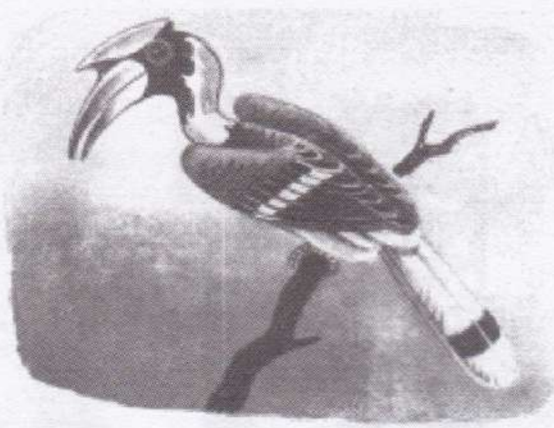


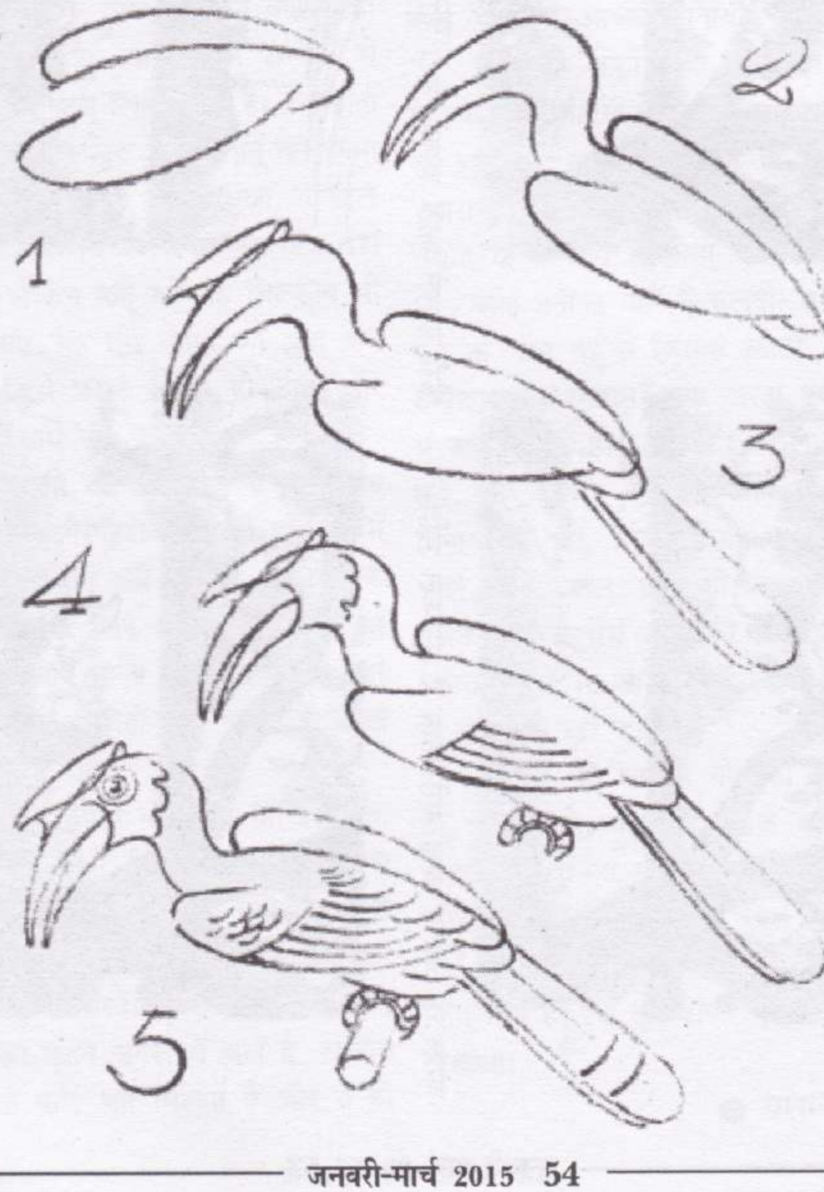
लेकिन, यदि हम सोचें, समझे और ध्यान से काम करें-



सदा सफलता पायें हम तो, इस दुनिया में नाम करें!

चित्र कैसे बनाएं





बालकूची ....सूरज





Title Code UPHIN44502/24-10-2013

बिन पुस्तक जीवन ऐसा
बिन खिड़की घर हो जैसा



अनुराग बाल पुस्तकालय

मनोरंजक, ज्ञानवर्द्धक, उत्कृष्ट पुस्तकों का संग्रह, कला, साहित्य, संस्कृति, विज्ञान, खेलों आदि पर रोचक किताबें और पत्र-पत्रिकाएँ, प्रेरक जीवनियाँ, देश-विदेश का चुनिन्दा बढ़िया साहित्य

अनुराग ट्रस्ट

सोमवार से शनिवार, 12 से 8 बजे तक
डी-68, निरालानगर, लखनऊ-226020

अनुराग ट्रस्ट की दिलचस्प किताबें पढ़ो!

सच से बड़ा सच	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	25.00
गुड़ की डली	कात्यायनी	20.00
धरती और आकाश	अ. वोल्कोव	120.00
नीला प्याला	अरकादी गैदार	40.00
गड़रिये की कहानियाँ	क़यूम तंगरीकुलीयेव	35.00
चींटी और अन्तरिक्ष यात्री	अ. मित्यायेव	35.00
अन्धविश्वासी शेकी टेल	सेर्गेई मिखाल्कोव	20.00
चलता-फिरता हैट	एन.नोसोव, होल्गर पुक्क	20.00
गधा और ऊदबिलाव	मक्सिम गोर्की, सेर्गेई मिखाल्कोव	20.00
गुफा मानवों की कहानियाँ	मैरी मार्स	20.00
हम सूरज को देख सकते हैं	मिकोला गिल, दायर स्लावकोविच	20.00
मुसीबत का साथी	सेर्गेई मिखाल्कोव	20.00
आकाश में मौज-मस्ती	चिनुआ अचेबे	20.00
आश्चर्यलोक में एलिस	सर्वान्तेस	30.00
जिन्दगी से प्यार	जैक लण्डन	30.00
अजीबोगरीब किस्से	होल्गर पुक्क	15.00
झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई (नाटक)	वृन्दावनलाल वर्मा	30.00
गुल्ली-डण्डा	प्रेमचन्द	20.00
रामलीला	प्रेमचन्द	20.00
लॉटरी	प्रेमचन्द	20.00
तोता	रवीन्द्रनाथ टैगोर	15.00
पोस्टमास्टर	रवीन्द्रनाथ टैगोर	15.00
काबुलीवाला	रवीन्द्रनाथ टैगोर	20.00
मनमानी के मजे	सेर्गेई मिखालोव	20.00
आम जिन्दगी के मजेदार कहानियाँ	होल्गर पुक्क	15.00
नये जमाने की परीकथाएँ	होल्गर पुक्क	15.00
नन्हे गुदड़ीलाल के साहसिक कारनामे	सुन यओच्युन	40.00
गोलू के कारनामे	रामबाबू	15.00

अनुराग ट्रस्ट के सभी प्रकाशनों के मुख्य वितरक – जनचेतना, डी-68, निरालानगर, लखनऊ-226020

जनचेतना, 114, जनता मार्केट, रेलवे बस स्टेशन रोड, गोरखपुर-273001

अनुराग ट्रस्ट की सभी पुस्तकों की सूची के लिए इस वेबसाइट पर जाएँ : janchetnabooks.org